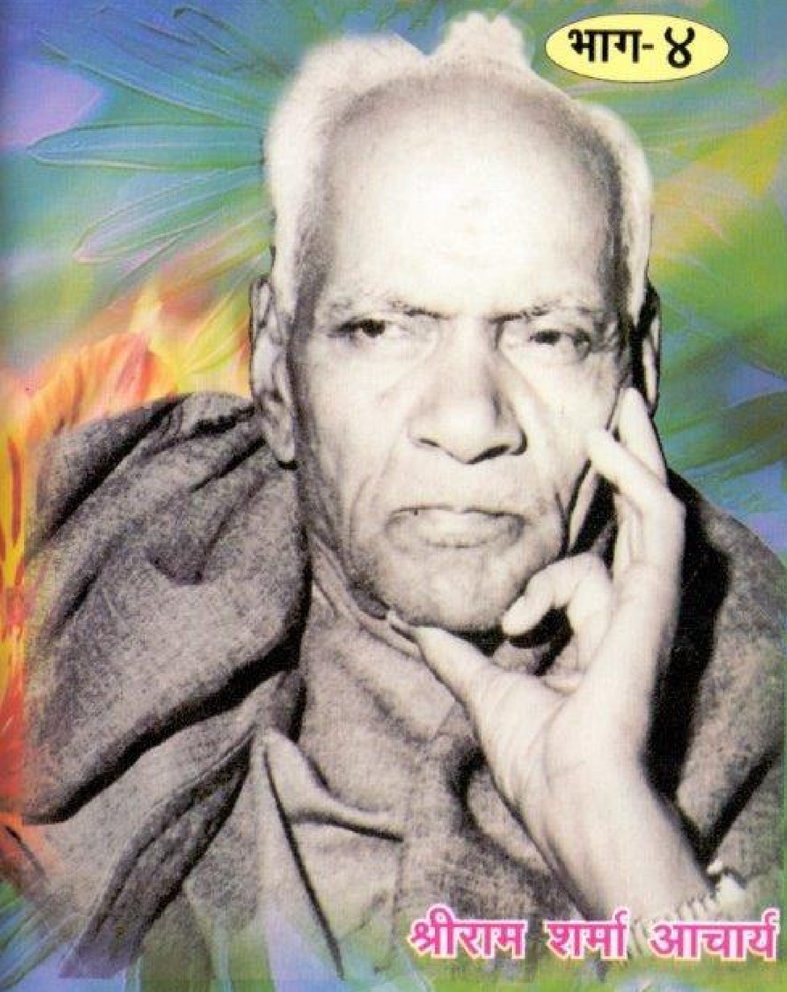
देखन में छोटे लगें घाव करें गम्भीर

भाग-४



श्रीराम शर्मा आचार्य



देखन में छोटे लगें घाव करें गम्भीर

(चतुर्थ भाग)

卐

लेखक :
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०११ मूल्य : १२.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह संकलन

'युग निर्माण योजना' में महापुरुषों के जीवन प्रसंगों, सत्य घटनाओं, लघु कहानियों, बोध कथाओं आदि को प्रकाशित करने की अविच्छिन्न परंपरा रही है । आकार में छोटे परंतु प्रेरक, मनोरंजक एवं रोचक होने के कारण सहज ही इन्हें पढ़ने की इच्छा होती ही है । कभी कभी ये प्रसंग मनुष्य के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन भी उपस्थित कर देते हैं, उसकी जीवन धारा को ही बदल देते हैं । यदि इतना न भी सही तो भी ये हमारे मन को छूकर उसे प्रकट-अप्रकट रूप से प्रभावित तो करते ही हैं । इनकी मर्मस्पर्शिता ही इनकी सबसे बड़ी विशेषता है । इनके बारे में निश्चयात्मक रूप से यह कहा जा सकता है कि देखन में छोटे लगें घाव करें गंभीर ।

एक बात और । प्रेरक प्रसंग प्राय: सभी वर्गों के पाठकों के लिए उपयोगी एवं रोचक होते हैं । बाल, युवा, वृद्ध, नर-नारी, छात्र-नेता-अभिनेता-व्यवसायी आदि सभी इन्हें पढ़ने में रुचि लेते हैं । जब भी समय मिला एक दो प्रसंग पढ़ लिया । प्रेरणा मिली तो चिंतन-मनन में डूब गए । अवसाद, विषाद, निराशा के क्षणों में तो ये परमौषधि का काम करते हैं ।

इन्हीं सब विशेषताओं के कारण 'युग निर्माण योजना' में प्रकाशित विभिन्न प्रसंगादि को संकलित कर हम कई भागों में इन्हें प्रकाशित कर रहे हैं । आशा है हमारा पाठक वर्ग इन लघु पुस्तिकाओं का अवश्य लाभ उठायेगा ।

-प्रकाशक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विषयानुक्रम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साहस असंभव को संभव बना देता है

बौद्ध मत राज्याश्रय मिलने तथा समर्थ प्रचारकों के कारण भारत भूमि से उत्पन्न होकर देश-देशांतरों में फैल गया । जापान, चीन और रूस तक उसका सीमा विस्तार हो गया । इस विस्तार के साथ ही उसके कुछ अनुयायियों में संकीर्णता पनपने लगी । वे दूसरे मतों का सम्मान करना भूलकर उन पर अत्याचार करने लगे । प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ बद्रीनाथ के मुख्य मंदिर की देव मूर्ति उन्होंने नारद कुंड में फेंक दी जिससे वहाँ वैशाख से कार्तिक तक होने वाली मानवी पूजा ही बंद हो गयी ।

भगवान् बुद्ध ने प्रचलित तत्कालीन भारतीय धर्म में उत्पन्न हुए गतिरोध व मूढ़ मान्यताओं को दूर करने के लिए बौद्ध धर्म चलाया था । उसे एक सामयिक सुधार-बीमारी की स्थिति में दी जाने वाली दवा व पथ्य के रूप में ही गिना जाना चाहिए था किन्तु उसी को सब कुछ मानकर बौद्ध मतावलंबी हिन्दू देवी-देवताओं को अपमानित करने लगे । तब स्वामी शंकराचार्य ने दिग्विजय का महान् संकल्प लेकर उसे पूरा किया और वैदिक धर्म को पुनर्जीवित किया ।

जब वे बद्रीनाथ धाम पहुँचे तो वहाँ के निवासियों ने वहाँ के देवालय की दुर्दशा का वर्णन किया । वे उसकी पुनर्प्रतिष्ठा करने के लिए मंदिर पर पहुँचे । वे पूजा आरंभ करवाना चाहते थे । किन्तु मूर्ति के अभाव में कुछ हो नहीं पा रहा था । वहाँ के मंदिर के पुजारी तथा संबंधित विद्वज्जन नयी मूर्ति बनवाने का विचार कर रहे थे ।

इस पर उन्होंने पूछा-"पहले की मूर्ति कहाँ है ?"

"उसे तो बौद्धों ने नारद कुंड में फेंक दिया है ।"

"तो उसे ही क्यों न निकाला जाय ?"

स्वामी जी के इस कथन पर सभी एक दूसरे का मुँह देखने लगे । एकत्रित शताधिक मनुष्यों के चेहरों पर 'यह असंभव है' का भाव तैर आया ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वामी शंकराचार्य ने उन सबसे पूछा-"आपमें से कोई देवमूर्ति को निकालने के लिए तैयार है ।"

इतने गहरे कुंड से मूर्ति को निकालने का प्रयास करना प्राणों से खेलना था । अतः कोई तैयार नहीं हुआ । सबको इस प्रकार पस्त देख वे स्वयं अपना उत्तरीय फेंककर कुंड में जा कूदे । लोगों के मुँह से दीर्घ निःश्वास निकल गई । यह संन्यासी या तो अपने प्राण गँवायेगा या अपने वचन-ऐसा ही लोग सोचने लगे ।

बड़ी देर बाद वे खाली हाथ बाहर निकले । कुछ देर साँस लेने के बाद फिर कूदे । लोगों ने मना किया पर वे माने नहीं । दूसरी बार भी वे खाली हाथ बाहर आये । तीसरे व अंतिम प्रयास में जब वे ऊपर आये तो मूर्ति उनके हाथ में थी ।

विग्रह का एक पाँव खंडित था । उसे जोड़कर पुनः उसकी प्रतिष्ठा की गयी । पंडितों ने खंडित विग्रह की स्थापना का विरोध किया पर शंकराचार्य के तर्कों व प्रमाणों के आगे उन्हें निरुत्तर होना पड़ा ।

स्वामी शंकराचार्य ने अपने प्राणों की बाजी लगा कर और बद्रीनाथ के विग्रह को नारद कुंड से निकाल कर यह प्रमाणित कर दिया कि वे पांडित्य और धर्म ज्ञान में ही शीर्षस्थ नहीं हैं वरन् उन शाश्वत सिद्धांतों पर दृढ़ निष्ठा रखते हुए उन्हें जीवन में उतार कर दिखा भी सकते हैं । यह अध्यात्म ज्ञान की ही शक्ति थी कि जिसके द्वारा उन्होंने असंभव को संभव कर दिखाया । उनका यह शौर्य व साहस ही उनके दिग्विजय का आधार बना था । एक नवयुवक द्वारा इस दुष्कर एवं महत्त कर्म को सम्पादित कर देना भी कम आश्चर्यजनक नहीं है । उनके जीवन के साथ ऐसी कई सत्य घटनाएँ जुड़ी हुई हैं जिनमें उन्होंने मृत्यु और जीवन को समभाव से स्वीकार करने की तत्परता दिखायी थी ।

स्वामी जी के इस साहस की गाथा आज भी असंभव को संभव कर दिखाने की उमंगें सत्साहसियों के हृदय में उत्पन्न करती रहती है । इन्हीं के चरण चिह्नों पर चलकर सामान्य मानव महामानव बना करते हैं ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिग्विजयी शंकराचार्य की पराजय

"तुम्हारे शरीर का स्पर्श होने से मैं अपवित्र हो जाऊँगा । रास्ता छोड़ दो । मैं स्नान कर चुका हूँ"-तरुण संन्यासी जगद्गुरु शंकराचार्य ने रोब और आदेश के स्वर में कहा ।

रास्ता रोककर खड़े उस व्यक्ति ने पूछा-"क्यों महाराज ऐसा क्यों ? मुझे स्पर्श करने से आप अपवित्र क्यों हो जायेंगे ? क्या मैंने स्नान नहीं किया, क्या मेरे वस्त्र अस्वच्छ हैं ?"

"नहीं भाई ! यह बात नहीं, तुम जानते हो मैं ब्राह्मण हूँ और तुम स्वपच (भंगी) । ब्राह्मण के लिए हरिजन का स्पर्श वर्जित है"-शंकराचार्य ने उसी आदेशात्मक स्वर में उत्तर दिया किन्तु स्वपच आगे से हटा नहीं । लगता था आज वह स्वपच भी यह निर्णय कराने के लिए ही वहाँ आकर खड़ा हुआ था कि क्या सचमुच हरिजन कुल में जन्मा व्यक्ति अस्पृश्य होता है और ब्राह्मण के घर में जन्मा पूर्ण पवित्र ।

सदियों से चली आ रही इस भ्रांति का एक बार हिन्दू जनता शास्त्रीय आधार पर विवेचन कर डालती, आर्ष मान्यताओं को मूढ़ हठ त्यागकर स्वीकार कर लेती, तो आज हिन्दू जाति ऐसी विशृंखलित न होती । बाह्य आक्रमणकारी छूत-अछूत का लाभ लेकर ही विजयी हुए । करोड़ों हिन्दू ईसाई और मुसलमान बनते चले गए, सारे विश्व में फैली हिन्दू जाति आज अपने ही देश में अल्पसंख्यक बनकर रह गई । छुआछूत के कारण ही सवर्णों ने धर्म-कर्तव्य की अवहेलना की अन्यथा शुद्ध वर्णाश्रम संस्कृति का कभी ह्रास न होता ।

जगद्गुरु के ऐसा कहते ही स्वपच पूछ बैठा-"महात्मन ! सुना है आप शास्त्रज्ञ हैं, आपने 'अद्वैतवाद' का सारे देश में प्रचार किया है । क्या आप अद्वैत शब्द की व्याख्या कर सकते हैं ?" हरिजन-स्वपच की वाणी में ओज था पर माधुर्य भी था, विनय थी और सत्याग्रह भी । शंकराचार्य के शिष्य और स्वयं शंकराचार्य भी उससे प्रभावित हुए बिना न रह सके ।

'एकोब्रह्म द्वितीयोनास्ति' अद्वैत इस सूक्त से ही प्रादुर्भूत सत्य है तात्,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिसका अर्थ है संसार में जो कुछ चेतना है वह ब्रह्म ही है । वह एक ब्रह्म ही विराट् जगत में छाया है । उसके अतिरिक्त और सब माया है"-शंकराचार्य ने उत्तर दिया ।

स्वपच अब हँसकर रास्ता छोड़कर एक ओर खड़ा हो गया और मुस्कराते हुए बोला-"यदि वर्ण विभेद स्वाभाविक और शास्त्रीय विधान है तो क्या वज्र सूचिकोपनिषद का शास्त्रकार झूठा है, जिसमें कहा गया है-'ब्राह्मण चेतना नहीं हो सकती क्योंकि चेतना तो सर्प, बिच्छू, गाय, बैल, भैंस में भी है । देह ब्राह्मण नहीं क्योंकि सम्पूर्ण चेतन सृष्टि पंचभौतिक पदार्थों से बनी है । ऐसा होता तो शव दाह से ब्रह्म हत्या का दोष न लगता ? ज्ञान भी ब्राह्मण नहीं क्योंकि वेद-शास्त्रों का पारंगत तो कोई क्षत्रिय भी हो सकता है । महात्मन ! उपनिषदकार का यह कथन कि 'मनुष्य चाहे कितने ही उच्च सवर्ण कुल में पैदा हुआ हो यदि वह सद्गुणी और सत्कर्म करने वाला नहीं, अष्टांग धर्म कर्तव्यों का पालन करने वाला नहीं तो वह ब्राह्मण नहीं । शास्त्रकार की इस मान्यता के विरुद्ध हरिजन कुल में जन्मे को हरिजन मानना क्या उचित है और क्या सभी ब्राह्मण ब्राह्मण हो सकते हैं ? यदि ऐसा नहीं तो मुझ धर्म में, आचरण में निष्ठा रखने वाले को आप अस्पृश्य कैसे कह सकते हैं ।" शंकराचार्य स्तब्ध रह गए । उन्होंने स्वपच के चरण स्पर्श करते हुए कहा-"महापुरुष ! समदर्शी हुए बिना कोई पंडित नहीं हो सकता । अपनी पराजय स्वीकार करता हूँ । तुमने मेरी भूल सुधार दी, इसके लिए तुम्हारा ऋणी हूँ ।" तत्काल ही भगवान शंकर स्वपच का कलेवर त्याग अपना असली स्वरूप दर्शाते हुए अंतर्धान हो गए । उस दिन से जगद्गुरु शंकराचार्य ने छूत-अछूत का भेद-भाव त्याग दिया ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पापी स्वयं अपने पाप का द्रष्टा तो है ही

बोधिसत्व ने एक बार किसी उच्च कुलीन ब्राह्मण परिवार में जन्म लिया था । यह परिवार अपनी विद्वत्ता, शील, सदाचार और उत्कृष्ट चरित्र के कारण वहाँ के समाज में महा श्रद्धा और अत्यधिक सम्मान का पात्र था । शास्त्रों में पारंगत, धर्मज्ञान में निपुण और नीति-अनीति, सद्-असद् विवेक से युक्त उनके पिता ने बोधिसत्व का लालन-पालन भी अपने परिवार की कुल मर्यादा और आदर्श जीवन की सतर्कताओं को ध्यान में रख कर किया ।

जब बोधिसत्व की आयु शिक्षा प्राप्त करने योग्य हुई तो उन्हें गुरुकुल भेज दिया गया । पैतृक विरासत में प्राप्त गुरुभक्ति और अध्ययनशीलता ने उनके गुरुजनों को बड़ा प्रभावित किया । उन दिनों अक्षर ज्ञान या जानकारियाँ देना मात्र ही शिक्षा का अर्थ नहीं था । वरन् शिक्षा का अर्थ था मनुष्य की अंतर्निहित शक्तियों का उद्घाटन तथा उन्हें सुसंस्कृत बनाना । इस उद्देश्य के लिए विद्यार्थी के चरित्र, स्वभाव, गुणों और प्रवृत्तियों को भी आदर्शोन्मुख बनाना उतना ही आवश्यक समझा जाता था जितना कि अन्य शिक्षा प्रकरणों को ।

विद्यार्थी का व्यक्तित्व किन दिशाओं में प्रवाही हो रहा है, यह जानने के लिए अध्यापकगण समय-समय पर परीक्षाएँ भी लिया करते थे और यह जानने का प्रयत्न करते थे कि विद्यार्थी का विकास किस किस क्षेत्र में हो रहा है । कहीं कोई त्रुटि होती दिखाई देती तो उसका संशोधन भी तत्काल किया जाता क्योंकि पतन के मार्ग पर कदम रखते ही यदि तुरंत न सम्हाला जाय तो फिर बाद में सम्हल पाना मुश्किल है ।

एक बार गुरुजनों ने इसी उद्देश्य से अपने विद्यार्थियों की परीक्षा अनूठे ढंग से ली । उस समय आश्रम का निर्वाह चलाने के लिए शिष्यों को भिक्षाटन के लिए भेजा जाता था । चाहे कोई राजा का पुत्र हो या रंक का, आश्रम में रहते हुए सभी समान समझे जाते और उन्हें समान रूप से ही गुरुकुल के नियमों का पालन करना पड़ता । इसी भिक्षाटन का प्रसंग छेड़कर एक दिन गुरुजी ने कहा, उस समय शिष्यगण भिक्षा प्राप्त कर लौटै ही थे-"आप लोगों का यह सारा परिश्रम मेरी दृष्टि में व्यर्थ है क्योंकि इससे हम लोगों को कभी पेट भर अन्न नहीं मिलता ।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आचार्य के इस कथन पर एक शिष्य ने कहा-"पर हम क्या करें गुरुदेव ! अपने वश में जितना है उतना कर लेते हैं । आश्रम की दरिद्रता हमें भी कष्ट देती है ।"

"कष्ट का अनुभव ही पर्याप्त नहीं है वत्स"-आचार्य ने कहा-"उसे दूर करने के प्रयास से ही व्यक्ति कष्टों से त्राण पा सकता है ।"

"हमें तो अपनी बाल बुद्धि से कोई उपाय सूझता नहीं"-दूसरे शिष्य ने कहा ।

"उपाय तो है । पर पता नहीं तुम लोग करना चाहो या न करना चाहो ।"

"आपकी आज्ञा के उल्लंघन का पाप हमने अपनी जानकारी में तो आज तक नहीं किया है । अपनी शक्ति भर आश्रम की दरिद्रता को दूर करेंगे । आप उपाय बताइये"-सभी ने समवेत स्वर में कहा ।

"जिस प्रकार तुम श्रमपूर्वक भिक्षा में अन्नादि लाते हो उसी प्रकार धन माँग कर लाया करो तो सुविधा होगी"-आचार्य ने कहा । फलतः दूसरे दिन भिक्षा में विद्यार्थियों ने अर्थ याचना की ।

सहज श्रद्धावश लोगों ने जितना बन सका उतना धन दिया । शिष्यों ने भिक्षा में प्राप्त मुद्रा आचार्य को सौंप दीं जिसे देखकर आचार्य ने कहा-"यह तो हमारी आवश्यकताओं की दशमांश भी पूर्ति नहीं कर सकेगा ।"

"तब फिर हमें क्या करना चाहिए"-शिष्यों ने पूछा ।

"क्यों न तुम सब रात के अँधेरे में राहगीरों को लूटने का काम करो"-आचार्य ने सुझाव देते हुए कहा ।

शिष्यगण अवाक् होकर आचार्य की ओर देखने लगे ।

"पर यह तो पाप है"-शिष्यों ने कहा ।

"पाप तब है जब किसी के सामने किया जाय, किसी एकांत स्थान पर तुम लोग ऐसा क्यों नहीं करते"-आचार्य ने समाधान दिया ।

शिष्य कुछ नहीं बोले पर बोधिसत्व से नहीं रहा गया, उन्होंने कहा-"पाप तो किसी न किसी के सामने ही किया जायेगा गुरुदेव ! वहाँ देखने वाला तो रहेगा ही । सब लोगों से भले ही छुपा लिया जाय पर अपने से कौन छुपा सकता है ।" यह उत्तर सुनकर आचार्य ने बोधिसत्व को छाती से लगा लिया ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पाप का प्रायश्चित पाप करने से नहीं होता

निर्जन और सुनसान राह पर भगवान् बुद्ध सौम्य और शांत मुद्रा में कदम-कदम आगे बढ़ रहे थे । मंथर गति से गंभीर और सौम्य शांति की दीप्ति बिखेरते हुए तथागत के साथ उनके अन्य शिष्य भी थे और सभी शिष्य उनके पीछे पंक्तिबद्ध होकर चल रहे थे । लक्ष्य था राजगृह । वहाँ पहुँचकर वहाँ के निवासियों को धर्म का उपदेश देना था । तभी राह में भेड़ों का एक झुंड निकला और उस झुंड के पीछे उन भेड़ों का मालिक गड़रिया चल रहा था ।

गड़रिये के कंधे पर भेड़ का बच्चा था जिसे वह उठाकर ले जा रहा था । शायद उसके शरीर में कोई पीड़ा रही होगी जिसके कारण वह चलने में असमर्थ था । यह सोचकर तथागत ने गड़रिये को रोका और पूछा-"तुम इस मेमने को कंधे पर क्यों उठाये हुए हो ?"

गड़रिये ने साधु वेश में एक तेजस्वी पुरुष को अपने सामने देखा तो वह अनायास ही श्रद्धा से नतमस्तक हो उठा और बोला-"भगवन् ! मेमने के पैर में चोट है । इसलिए इसे कंधे पर रखना पड़ा है ।"

बुद्ध कातर हो उठे और उन्होंने मेमने के उस अंग पर हाथ रखा जहाँ कि गड़रिये ने चोट बतायी थी । करुणा और दया की प्रतिमूर्ति तथागत का स्पर्श पाकर उस मूक पशु को जैसे राहत मिली हो । उसने आँखें मूँद लीं और चुपचाप मुँदी पलकों से दो चार आँसू टपका दिए । भगवान् बुद्ध मेमने की यह स्थिति देखकर और भी दयार्द्र हो गए ।

तभी गड़रिये ने पूछा-"भंते ! आपको इस मेमने के पैर की चोट से इतनी व्यथा है तो फिर थोड़ी देर बाद जब इन भेड़ों को एक साथ अग्नि में समर्पित किया जायगा तब कितनी व्यथा होगी ।"

"क्या कहा ?"-सदैव शांत रहने वाले बुद्ध के मुखमंडल पर व्यग्रता आ गयी-"क्या ये सब भेड़ें बलि चढ़ाने के लिए ही ले जायी जा रही हैं । कौन है वह अभागा जो इन निरीह-निरपराध भेड़ों की बलि चढ़ाकर स्वर्ग प्राप्ति का सौभाग्य लूटना चाहता है ।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"राजगृह का अधिपति अजातशत्रु । कहते हैं उस पर अपने पिता की हत्या का दोष लगा है । उसी पाप के प्रायश्चित स्वरूप वह यज्ञ रचाकर एक हजार पशुओं की बलि चढ़ाने जा रहा है"-और इतना कहकर जल्दी के कारण वह गड़रिया वहाँ से चल दिया ।

भगवान् बुद्ध जब राजभवन पहुँचे तो पाया कि गड़रिये ने जो कहा था वह सच है । राजभवन के आँगन में स्त्री-पुरुषों की भीड़ लगी हुई थी । यज्ञ वेदी के चारों ओर बैठकर ब्राह्मण पुरोहित मंत्रोच्चार कर रहे थे और अजातशत्रु पीत वस्त्र धारण कर यजमान के वेष में बैठे हुए थे । चारों ओर पशुओं की लंबी कतारें लगी हुई थीं तथा उनके पास ही हाथ में नंगी तलवार लिए वधिक खड़े हुए थे । तभी आयोजन स्थल पर तथागत ने पदार्पण किया । सारे सभास्थल में खलबली मच गयी । अजातशत्रु भी भगवान् की अभ्यर्थना हेतु अपने आसन से उठ खड़ा हुआ और बिना पूछे ही इस समारोह के संबंध में बताने लगा । सारी बातें सुकर भगवान् बुद्ध ने भेड़ों के सामने रखी हुई वनस्पतियों में से घास का एक तिनका उठाया और बोले-"राजन् ! इस तिनके को तोड़कर दिखाना तो जरा ।"

जिन लोगों ने इस विचित्र बात को सुना वे आश्चर्य में पड़ गए । अजातशत्रु ने भी आश्चर्यपूर्वक तथागत का कहना मानकर वह तिनका तोड़ा और अगले आदेश की प्रतीक्षा करने लगा । तब भगवान् ने कहा-"राजन् ! अब इन टूटे हुए तिनकों को पहले जैसा जोड़ दो ।"

राजा चुपचाप खड़ा रहा । तब भगवान् ने कहा-"राजन् ! मैं तुमसे यही बात इस समारोह के संबंध में भी कहना चाहता था । पिता के वध का जो पाप हुआ है उसे किसी भी प्रयत्न द्वारा मिटाया नहीं जा सकता जैसे इस टूटे तिनके को नहीं जोड़ा जा सकता ।" तथागत से यह कथन सुनकर अजातशत्रु ने वह आयोजन निरस्त कर दिया ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पश्चाताप की आग

अजातशत्रु था सुसंस्कारी और विचारशील युवराज, पर जिस मित्र की संगति में वह रहता था वह बड़ा कुटिल, चालाक और धूर्त था। अजातशत्रु के उस मित्र का नाम था देवदत्त। वह हमेशा अपने मित्र को कुमार्ग पर डालने के लिए भड़काया करता था। विलासिता और भोग के लहराते हुए सागर में धीरे-धीरे अजातशत्रु डूबने लगा तथा उसे नीति-अनीति के भेद-विश्लेषण का ज्ञान भी विस्मृत हो गया।

देवदत्त ने जब देखा कि अपना रंग पूरी तरह चढ़ गया है तो उसने एक दिन अजातशत्रु को पिता के विरुद्ध भड़काया। इस तरह भड़काये जाने पर वह सोचने लगा कि मेरे पिता को राज्य करते हुए चालीस से भी अधिक वर्ष हो गए हैं। मेरी आयु इस समय तीस वर्ष की है। क्यों नहीं वे मुझे राज्याधिकार सौंपते हैं। उसके मन में यह भावना भी पनपने लगी कि पिता तो जब जो चाहता है वह भोग सामग्री पा लेता है और मुझे अपने अधीन रखकर अपना वर्चस्व बनाए रखता है जबकि राज्य का असली अधिकारी मैं हूँ।

यह सोचते हुए उसने अपने पिता की हत्या कर राज्य पर अपना अधिकार जमाने की योजना बनायी। कहना नहीं होगा कि देवदत्त भी इस योजना में महत्वपूर्ण भूमिका रखता था। योजना पूरी होने से पहले ही सम्राट् बिंबिसार को इसका पता चल गया। उचित तो यह था कि अजातशत्रु को सही दिशा में अग्रसर होने का अवसर दिया जाता तथा उसे सुधारने की चेष्टा की जाती। परंतु पुत्र मोह ने इस व्यवहारिक आदर्श को क्रियान्वित नहीं होने दिया तथा बिंबिसार ने यह सोचकर कि उठती उम्र में अजातशत्रु भी भोग-विलास की आकांक्षा रखता होगा तो उन्होंने अजातशत्रु को चंपा प्रदेश का शासक नियुक्त कर दिया।

उत्तरदायी ढंग से शासन व्यवस्था सम्हालने की अपेक्षा अजातशत्रु निंद्य कर्मों की ओर प्रवृत्त हुआ। देवदत्त उसे यह कहते हुए बराबर भड़काता रहता था कि सम्राट् ने तुम्हें बेवकूफ बना दिया।

अजातशत्रु के उत्पात जब बढ़ने लगे तो सम्राट् ने गुप्तचरों के माध्यम से उसकी महत्वाकांक्षा का पता लगवाया। पता लगा कि अजातशत्रु चंपा प्रदेश

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तक ही अपना अधिकार सीमित रहने के कारण संतुष्ट नहीं है तथा वह अपनी सीमाओं का विस्तार करना चाहता है ।

बिंबिसार ने सोचा कि युवराज होने के कारण अंततः मेरे बाद अजातशत्रु ही तो राज्य का अधिपति बनेगा । अभी उसकी सीमाएँ विस्तृत कर देने से यदि वह संतुष्ट हो जाता है तो उसके अधिकार क्षेत्र में और बड़ा राज्य देने में क्या बुराई है ।

और उन्होंने अपने राज्य की राजधानी राजगृह को छोड़कर शेष सारा क्षेत्र अजातशत्रु के अधिकार में दे दिया । लेकिन अजातशत्रु तो इस समय किसी और के संकेतों पर ही चल रहा था । देवदत्त ने उसे सुझाया कि बिंबिसार ने अंतिम अधिकार तो फिर भी अपने ही पास रखा है । सम्पूर्ण राज्य पर कब्जा हो भी गया तो क्या हुआ, अभी उसका हृदय प्रदेश तो उसके अधिकार में है ही नहीं । अजातशत्रु समझने लगा कि सम्राट् ने उसे केवल फुसला भर दिया है ।

अजातशत्रु के उत्पात पूर्ववत् जारी रहे । बिंबिसार ने अब की बार अपने पुत्र से स्वयं ही उसका मनोरथ पूछा तो अजातशत्रु ने राजगृह को भी अपने आधीन होने की माँग रखी । बिंबिसार ने अपने पुत्र की यह माँग भी मान ली और उसे राजगृह भी सौंप दिया । परंतु राजकोष अपने ही अधिकार में रखा ।

अपने पिता के पास राजकोष का नियंत्रण भी अजातशत्रु को सहन नहीं हुआ । वह उसे भी हथियाने की चेष्टा करने लगा । एक दिन अवसर पाकर उसने बिंबिसार से कह ही दिया-"वस्तुतः राज्य का स्वामी वह होता है जिसके पास राजकोष का अधिकार रहता है । आपने मुझे सारे राज्य की बागडोर तो सौंप दी पर राजकोष की व्यवस्था से मुझे वंचित क्यों रखा है ?"

"बेटा ! तुमसे मैं कोई अंतर नहीं रखता हूँ पर बहुत दिनों से मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारी गतिविधियाँ तथा प्रवृत्तियाँ किसी कुमित्र के इशारे पर उचित-अनुचित दिशा का भेद किए बिना चल रही हैं । तुम इस कुमित्र की संगति छोड़ दो तो मैं राजकोष भी तुम्हें ही दे दूँगा"-बिंबिसार ने कहा ।

"जैसा आप कहते हैं वही होगा"-अजातशत्रु ने वचन दिया और राजकोष की नियंत्रण व्यवस्था अपने हाथों में ले ली ।

लेकिन जिस मित्र के परामर्श से वह इस पद तक पहुँचा था उसे कैसे भुला सकता था । अब भी दोनों का साथ बराबर बना रहता था । यही नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसने मित्र को एक उच्च पद पर भी नियुक्त कर दिया था तथा स्वयं उसके हाथों की कठपुतली बन गया था ।

बिंबिसार से यह देखा न गया और उसने पुत्र अपने पुत्र को सचेत किया । लेकिन अब अजातशत्रु को अपने पिता से कोई स्वार्थ तो रह नहीं गया था । जहाँ तक भी वह पा सकता था, पा चुका था । उसकी आँखें बदल चुकी थीं । अतः बिंबिसार को अपने मार्ग का रोड़ा समझकर उसे बंदी बना लिया तथा उसे कारागृह में डाल दिया ।

पुत्र ने भले ही अपने पिता को शत्रु समझ लिया हो पर पत्नी अपने पति को कैसे भूल सकती थी । राजमाता बराबर कारागृह में जातीं तथा बिंबिसार के लिए भोजन आदि की व्यवस्था करतीं । यह कार्य वे अपने पुत्र की आँखों से बचाकर किया करतीं । अजातशत्रु तो समझता था कि पिताजी भूखों मर रहे होंगे और अब तक काल-कवलित हो चुके होंगे । लेकिन एक दिन उसे पता चल ही गया और उसने अपनी माँ को भी डाँटा तथा पहरेदारों को भी सतर्क कर दिया कि राजमाता को बिंबिसार तक खाना न ले जाने दिया जाय ।

राजमाता अब अत्यंत गुप्त रीति से अपने पति तक खाना पहुँचाती थीं लेकिन यह भी कब तक गोपनीय रहता ।

एक दिन अजातशत्रु को इसका भी पता चल गया । उसने राजमाता का बिंबिसार से मिलना ही रोक दिया । यही नहीं बिंबिसार को जिस कोठरी में कैद कर रखा गया, उसकी खिड़कियाँ भी बंद करवा दीं ताकि किसी भी प्रकार खाना न पहुँचाया जा सके ।

कुछ दिन बीते । अजातशत्रु के एक बच्चे की अँगुली में फोड़ा हुआ । वह फोड़ा उसने अपने पिता को दिखाया तो अजातशत्रु ने उसे मुँह में लेकर दबा लिया । दबाने पर फोड़ा फूट गया और बच्चे को बड़ी शांति मिली । वहीं राजमाता भी खड़ी थीं । यह सब देखकर उनके मुँह से एक आह निकली ।

"क्या हुआ माँ !"-अजातशत्रु ने पूछा ।

"कुछ नहीं बेटा !"-राजमाता बोलीं-"अभी के दृश्य को देखकर मुझे तुम्हारे बचपन की एक घटना याद हो आयी थी ।"

"मेरे बचपन की"-अजातशत्रु बोला-"सुनूँ तो मैं भी ।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"जब तुम भी इस राजकुमार की आयु के थे तब तुम्हारे दाँये हाथ की अनामिका अँगुली में ऐसा ही एक फोड़ा निकला था । खेल-खेल में वह फोड़ा फूट गया था और उससे निकला हुआ पीव देखकर तुम चीत्कार कर उठे थे । पास ही तुम्हारे पिता भी बैठे थे । तुम्हारी अँगुली को देखते ही उन्होंने उसे मुँह में लिया और सारा पीव निचोड़ लिया । फिर तुम्हें समझाते हुए बोले-"अहा ! यह तो बड़ी स्वादिष्ट चीज अपनी अँगुली में भरे हुए थे अजात......।"

इससे आगे के कोई शब्द अजातशत्रु नहीं सुन पाया । इतने शब्दों ने ही उसके अंतःकरण के न जाने किस मर्मस्थल को छू लिया था कि उसके हृदय में 'उथल-पुथल' मच गयी और वह दौड़ा हुआ उस कोठरी की ओर गया जिसमें कि बिंबिसार को कैद कर रखा था । कोठरी खुलवायी गयी तथा अजातशत्रु "पिताजी ! मुझे क्षमा कर दीजिए"-कहता हुआ दीवार के सहारे बैठे बिंबिसार के चरणों में गिर पड़ा । जैसे ही वह पिता के चरणों में गिरा बिंबिसार की निर्जीव देह उसके शरीर पर लुढ़क पड़ी ।

माँ द्वारा सुनाई गयी घटना ने अजातशत्रु के अचेतन मन में न जाने क्या झंकार उत्पन्न कर दी कि वह जीवन भर शांत नहीं हो सका, पश्चाताप की ज्वालायें धधकती रहीं । यहाँ तक कि उसने राजपाट छोड़कर संन्यास भी ले लिया ।

प्रजा पालक अशोक

एक बार महाराज अशोक के राज्य में अकाल पड़ा । जनता भूख तथा प्यास से त्रस्त हो उठी । राजा ने तत्काल राज्य में अन्न के भंडार खुलवा दिए । सुबह से लेने वालों का ताँता लगता और शाम तक न टूटता ।

एक दिन संध्या हो गई । जब सब लेने वाले निबट गए तो एक कृशकाय बूढ़ा उठा और अन्न माँगा, बाँटने वाले भी थक चुके थे । अतः उन्होंने उसे डाँटकर कहा-"कल आना, आज तो अब खैरात बंद हो गई है ।"

तभी एक हृष्ट-पुष्ट शरीर के नवयुवक जैसा व्यक्ति आया और बाँटने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वालों से कहा-"बेचारा बूढ़ा है । मैं देख रहा हूँ कि बड़ी देर से बैठा है यह । शरीर से दुर्बल होने के कारण सबसे पीछे रह गया है । इसे अन्न दे दो ।"

उसकी वाणी में कुछ ऐसा प्रभाव था कि बाँटने वालों ने उसे अन्न दे दिया । उस नवयुवक की सहायता से उसने गठरी बाँध ली । अब उठे कैसे ? तब वही युवक बोला-"लाओ, मैं ही पहुँचाये देता हूँ ।" और गठरी उठाकर पीछे-पीछे चलने लगा ।

बूढ़े का घर थोड़ी दूर पर ही रह गया था । तभी एक सैनिक टुकड़ी उधर से गुजरी । टुकड़ी के नायक ने घोड़े पर से उतर कर गठरी ले जाने वाले को फौजी अभिवादन किया । उस व्यक्ति ने संकेत से आगे कुछ बोलने से मना कर दिया । फिर भी बूढ़े की समझ में कुछ-कुछ आ गया । वह खड़ा हो गया और कहने लगा-"आप कौन हैं, सच-सच बताइये ।"

वह व्यक्ति बोला-"मैं एक नौजवान हूँ और तुम वृद्ध हो, दुर्बल हो । बस इससे अधिक परिचय व्यर्थ है । चलो बताओ तुम्हारा घर किधर है ।" पर अब तक बूढ़ा उस नवयुवक को पूरी तरह पहचान चुका था । वह पैरों में गिर गया और क्षमा माँगते हुए बड़ी मुश्किल से बोला-"महाराज ! आप सच्चे अर्थों में प्रजा पालक हैं ।" वह नवयुवक और कोई नहीं, स्वयं सम्राट् अशोक ही थे ।

महत्वाकांक्षा पूर्त्यार्थ कर्तव्य की हत्या नहीं

मगध के सिंहासन पर तब सम्राट् इंद्रगुप्त आसीन थे । महाकौशल से उनकी शत्रुता हो गई । महाकौशल की शक्ति और सैन्यबल उन दिनों यौवन पर था । वहाँ से किसी भी क्षण आक्रमण की पूरी आशंका थी । यह बात मगध के एक-एक नागरिक को मालूम थी । इसलिए कोई भी रात में बाहर न निकलता । सारी प्रजा युद्ध की आशंका से भयभीत थी ।

मगध के सैनिक पूरी तत्परता के साथ सीमा चौकियों की रक्षा कर रहे थे । पर आपात्कालीन स्थिति हो तो किसी भी व्यक्ति को चुप नहीं बैठना चाहिए चाहे वह राजा हो या प्रजा । इंद्रगुप्त स्वयं इस आदर्श का पालन कर रहे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

थे । वे रात-रात भर जागकर प्रजा की रक्षा-व्यवस्था देखा करते थे ।

तब जब मगध के युवक और प्रौढ़जन भी भयवश अंधकार में बाहर नहीं निकलते थे, एक स्त्री घर से बाहर निकला करती । वह राज दरबार की मालिन थी । सम्राट् और साम्राज्ञी दोनों प्रातःकाल पीयूष वेला में भगवान् पाशुपत का पूजन किया करते थे, उसके लिए शद्ध और ताजे पुष्पों की आवश्यकता होती थी । मालिन ने अपने इस कर्तव्यपालन में इन गाढ़े दिनों में भी भूल नहीं की । वह प्रतिदिन पूजा के पुष्प नियमित रूप से पहुँचाती रही । किसी को भी उँगली उठाने का अवसर नहीं मिला कि मालिन डरकर अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर रही ।

प्रातःकाल होने में अभी देर थी । महाराज इंद्रगुप्त भ्रमण करते हुए उधर ही आ निकले जहाँ उस मालिन का निवास था । अंधकार में कुछ आकृतियाँ उधर घूमती दिखाई दीं । महाराज को संदेह हुआ । वह चुपचाप झुरमुट में खड़े होकर स्थिति का अध्ययन करने लगे ।

भवन के बाहर पदचाप सुनकर मालिन की निद्रा टूट गई । उसने समझा प्रातःकाल हो गई है । सो फूल चुनने की पेटिका उठाकर वह घर से बाहर आई । पर यहाँ तो स्थिति कुछ और ही थी । महाकौशल के चार गुप्तचरों ने उसे बाहर आते ही घेर लिया । किसी तरह उन्हें पता चल गया था कि मालिन नियमपूर्वक राज्य-भवन में प्रवेश करती है । अतः उसे वहाँ की सारी व्यवस्था का पता होगा ही । इसीलिए प्रातः होने से पूर्व ही यह दल वहाँ आ पहुँचा था ।

नारी के कोमल नहीं, कठोर शब्द निकले-"कौन हो तुम ? इतनी रात गए यहाँ क्या कर रहे हो ।" "भद्रे ! हम आपके अतिथि हैं । आपकी सेवा पाने का अधिकार लेकर आए हैं । यदि वह अधिकार उपलब्ध हो गया तो आप महाकौशल की सम्मानित महिलाओं में होंगी । धन, वैभव आपके चरणों पर ऐसे लोटेगा जैसे नगराज के चरणों में सिंधु का जल ।" एक गुप्तचर ने धीमे स्वर में कहा ।

"महाकौशल और मैं ! मेरा महाकौशल से क्या संबंध ? साफ-साफ कहो क्या चाहते हो ?"-मालिन ने पीछे हटते हुए दृढ़ स्वर में पूछा । "हम महाकौशल के सैनिक हैं । मगध राज्य का रहस्य ज्ञान करने के लिए आए हैं ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसकी जानकारी भर तुम्हें देनी है । उसके बदले महान् ऐश्वर्य की स्वामिनी बनोगी ।"

और इससे पूर्व कि वह कुछ और कहे, मालिन ने तड़पकर कहा-"बस ! बंद करो बकवास, आगे और कुछ कहा तो जबान काट लूँगी । इस देश के निवासी महत्वाकांक्षाओं के लिए कर्तव्यों की हत्या करना नहीं जानते । हम प्राण दे सकते हैं पर अपने कर्तव्यों से एक इंच भी डिग नहीं सकते ।" गुप्तचर चिल्लाया-"मूर्ख स्त्री ! यदि ऐसा ही है तो इसका फल भी तू ही भुगतेगी ।" फिर अपने साथियों की ओर देखकर उसने आज्ञा दी-"पकड़ लो इसे, कस दो मुश्कें । जब लौह-शलाकाओं से छेदा जायगा तब कर्तव्यनिष्ठा याद आयेगी इसे ।"

इससे पूर्व कि सैनिक उसे हाथ लगायें, महाराज इंद्रगुप्त झुरमुट से बाहर निकल आये । मगध और महाकौशल की पहली झड़प वहीं हुई । कर्तव्यनिष्ठ मालिन की रक्षा के लिए महाराज इंद्रगुप्त ने चारों सैनिकों को वहीं धराशायी कर दिया ।

बलिदानों की नींव राष्ट्र का करती है निर्माण

कितने ही दिनों से तुमुल युद्ध चल रहा था । कभी एक पक्ष की सेना जीतती मालूम पड़ती और कभी दूसरे पक्ष की । आज युद्ध में निरत जूनागढ़ के राजा ने वीरगति पाई थी । राजा को यमराज का अतिथि बनता देख सेना में भगदड़ मच गई । विद्युत गति से यह संदेश राजमहलों में पहुँचा तो हाहाकार मच गया । राजा पट्टनराज विजयी हो जाने के पश्चात भी युवराज नौघण को बंदी बनाना चाहता था । मंत्री को जैसे ही पता चला उसने राजमाता और युवराज को गुप्त द्वार से बाहर निकाल दिया ।

पट्टनराज की सेनाओं ने महल में प्रवेश किया तो वहाँ अंगरक्षकों और पहरेदारों के अतिरिक्त कोई भी न मिला । सेनापति खिसिया कर बाहर लौट आया । इधर देवायत अहीर ने राजमाता और युवराज को आश्रय दिया । निर्भीक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आश्रयदाता भली-भाँति जानता था कि जब पता लग जायेगा तो मुझे मृत्यु-दंड ही प्राप्त होगा, पर राष्ट्रप्रेम के लिए वह बड़े से बड़ा संकट उठाने को तैयार था।

एक दिन पट्टनराज के गुप्तचरों ने पता लगा ही लिया। कई सैनिकों ने अहीर के मकान को घेर लिया। गाँव में खलबली मच गई। दरवाजा खटखटाया तो अहीर घर से बाहर आया। सैनिकों को सामने देखकर वह समझ गया कि इनके रूप में आज मृत्यु मेरा वरण करने आई है, अब कोई शक्ति मुझे बचा न सकेगी। पर राजकुमार की रक्षा तो किसी भी प्रकार होनी ही चाहिए- उसने सोचा। सेनानायक ने मेघ गर्जना सी वाणी में कहा-"कहाँ है राजकुमार ! उस साँप के बच्चे को मेरे सामने प्रस्तुत करो अन्यथा तुम्हारा मस्तक धड़ से अलग कर दिया जायेगा।"

"कौन राजकुमार ? मैं नहीं जानता उसे।"

देवायत को वस्त्रहीन करके एक वृक्ष से बाँध दिया गया। उसकी पीठ पर कोड़ों की मार पड़ने लगी। शरीर की चमड़ी उधड़ गई। रक्त प्रवाहित होने लगा, पर उसने एक भी बात अपने मुँह से न कही।

"सेनानायक ! आप इन्हें छोड़ दीजिए। मैं अभी राजकुमार को आपके सामने प्रस्तुत करती हूँ।" देवायत की पत्नी ने कहा। वह घर में गई और अपने इकलौते पुत्र को राजसी वस्त्र पहनाकर बाहर ले आई। उसकी आँखों से अश्रु बरस रहे थे। वह जानती थी कि आपत्तिग्रस्त राजमाता और युवराज को शरण देने का कितना भयंकर परिणाम मिलने वाला है।

"क्या नाम है तेरा !"-छद्मवेषी राजकुमार से सेनापति ने पूछा।

"मेरा नाम राजकुमार नौघण है। क्या आपको सेनापति होते हुए भी बात-चीत करने के साधारण से नियमों का भी ज्ञान नहीं है ? क्या एक राजकुमार से 'तेरा' और 'तुम' कहकर बात करनी चाहिए ?" निर्भीकता से देवायत के पुत्र ने उत्तर दिया।

"विजेता नरेश पट्टनराज द्वारा परास्त कर देने के बाद न कोई राजा और न कोई राजकुमार। तुम तो एक भगोड़े बंदी हो जो अपनी जान बचाकर महल से भागे और एक अहीर के यहाँ शरण ली।" इतना कहकर शत्रु के सेनानायक ने तलवार से ऐसा तीक्ष्ण वार किया कि उस बालक का सिर धड़ से अलग हो गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अहीर दम्पत्ति अपने कर्तव्य की बलिवेदी पर पुत्र को न्यौछावर कर संतुष्ट हुए । देवायत का यह अपूर्व त्याग राज्य की जनता के लिए चर्चा का विषय बन गया । जूनागढ़ की बिखरी हुई सैन्य शक्ति संगठित होने लगी । जनता भी पूरा-पूरा सहयोग देने के लिए तैयार हो गई । युवराज अपनी सेनाओं को सुसज्जित कर बदला चुकाने के लिए चल पड़ा । उसने शत्रु राजा को परास्त कर अपना राज्य स्वाधीन कर लिया ।

पिता के सिंहासन पर बैठते ही उसने सबसे पहले अहीर दम्पत्ति का सार्वजनिक अभिनंदन किया और उन्हें महल में ही रख लिया । वह जन्म देने वाली माता से पहले जीवन रक्षा करने वाली माता की चरण रज अपने मस्तक से लगाता था क्योंकि उसने युवराज की रक्षा के लिए अपने इकलौते पुत्र तक का उत्सर्ग कर दिया था ।

प्रमाद का दुष्परिणाम

सोलह बार मुहम्मद गौरी को हरा देने के बाद पृथ्वीराज को जैसे गर्व हो गया था । वह समझने लगे थे कि गौरी अब उन्हें परास्त नहीं कर सकता । विजय के गर्व में उन्होंने इस तथ्य को भुला दिया था कि गफलत में पड़ जाने पर विजय क्षण भर में ही पराजय में बदल सकती है । वे न केवल इस तथ्य के प्रति आँखें मूँदे थे वरन् उन्होंने ऐसी गतिविधियाँ भी अपनानी शुरू कर दी थीं जिससे लगता था कि वे अपने दायित्व के प्रति अब उतने गंभीर नहीं रह गए हैं ।

संयोगिता जैसी अनिंद्य सुंदरी से उनका विवाह हुआ था और वे अपनी प्रियतमा के रूप जाल में ऐसे खो गए थे कि न राज्य प्रबंध सूझता था और न ही सुरक्षा का कोई ध्यान था । अपनी दुनिया को पृथ्वीराज ने संयोगिता के कक्ष तक ही समेट लिया था । कब दिन उगता और कब शाम होती, पृथ्वीराज को इसका कोई पता नहीं चलता । संयोगिता की रूप माधुरी को देखते-देखते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आँखें थक जातीं पर देखने की चाह न मिटती । कामिनी के स्पर्श सुख की चाह कभी नहीं मिटती है । वह बुझाने के प्रयास में आग में घी पड़ने की तरह और भी भड़क जाती है ।

फिर खबर मिली कि गौरी पुन: आक्रमण की तैयारी कर रहा है । गौरी की आँखों में तो भारत की उस अपार सम्पदा के सपने तैर रहे थे जो विजय के बाद उसे करतलगत होती मालूम पड़ती थी । जब भी दरबार में कोई भारत की श्री-समृद्धि की चर्चा करता तो उसके मुँह से आह निकल जाती थी और विचार आने लगते थे कि कब उसका सपना पूरा होगा । अपना स्वप्न पूरा करने के लिए गौरी दिन-रात उधेड़-बुन में लगा रहता था । सोलह बार आक्रमण करने और हर बार पराजित होने पर वह यह तो अच्छी तरह समझ चुका था कि भारतीय वीरों का पराक्रम वह आमने-सामने होकर नहीं झेल सकता है । संभवत: वह इसीलिए चाहता था कि कोई दूसरा रास्ता अपनाया जाय । यह दूसरा रास्ता खोजने में उसके जासूसों ने सफलता प्राप्त कर ली थी । विदित हुआ था कि कन्नौज का राजा पृथ्वीराज से जला-भुना बैठा है । उसको साथ लिया जाय तो वह विभीषण साबित हो सकता है ।

विश्वस्त साथियों को मध्यस्थ बनाकर गौरी ने जयचंद का सहयोग पाने में सफलता प्राप्त कर ली थी । जब आक्रमण की पूरी तैयारियाँ हो गयीं और इस बात का पता पृथ्वीराज के मंत्री गुरुराय और राज्य कवि चंद को चला तो उन्होंने इसे पृथ्वीराज को सूचित करना आवश्यक समझा । चंद और गुरुराय जब आक्रमण की सूचना देने गए तब भी पृथ्वीराज अपने विलास में मग्न थे । बिना कुछ जाने ही पृथ्वीराज ने किसी से भी मिलने के लिए मना कर दिया । तो चंद ने यह संदेश भिजवाया-

"कग्गर अप्पहं राज कर, मुँह अप्पहं इह बत्त ।
गौरी रतौ तुम धरनी, तुम गौरी रस रत्त ॥"

"यह काम करने के लिए पूरा जीवन पड़ा है । गौरी तुम्हारी मातृभूमि को ताक रहा है और तुम गौरी (स्त्री) के रस में ही डूबे हुए हो ।"

तब भी पृथ्वीराज ने कोई तत्परता नहीं दिखाई । संयोगिता को जब इस बात का पता चला तो उसने अपने पति को फटकारा और कहा-"जब शत्रु

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तुम्हारी मातृभूमि पर आँख गड़ाये हुए है तब तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?"

सन्न रह गया पृथ्वीराज और फिर उस फटकार को सुनकर बाहर निकल आया । लेकिन अब तक बहुत देर हो चुकी थी । इस युद्ध में पृथ्वीराज गौरी से हार गया । काश, पृथ्वीराज सो नहीं जाता, राग-रंग में डूबा नहीं होता तो भारत का इतिहास आज कुछ और ही होता ।

कुरीति को तोड़ा हम्मीर ने

"यह केवल हठ की बात नहीं काका सा ! आप यह क्यों नहीं सोचते कि हम भारतीयों के घरों में नारी की स्थिति पहले ही कैसी दयनीय है ? राजकुमारी मंगलमुखी का वैधव्य यदि मेरे लिए अमंगल हो सकता है तो यह सारे भारतीयों के मस्तक पर भी कलंक क्यों न होना चाहिए ? विधवाओं की सर्वाधिक संख्या इसी देश में है और इसके उत्तरदायी सामाजिक कारण भी पुरुषों द्वारा ही तैयार किए गए हैं । क्या अपने किए का प्रायश्चित पुरुषों को करना नहीं चाहिए ?"

हम्मीर इतना कहते-कहते कुछ आवेश में आ गए थे पर अपने काका सा-अजयसिंह और अन्य सभासदों का वे पूर्ण सम्मान करते थे । इसलिए फिर अपनी वाणी को संयत और विनीत बनाते हुए बोले-"काका सा ! राजकुमारी के कोई संतान नहीं है, वे छोटी आयु में ही विधवा हो गईं । राज परिवार संन्यासी का सा जीवन जी नहीं सकता । फिर क्या यह राजकुमारी की कोमल भावनाओं पर आघात न होगा कि उन्हें इस खेलने-कूदने की आयु में रीति-रिवाजों के बंदी गृह में डाल दिया जाये ? संबंध मुझे करना है और मैं उसके लिए तैयार हूँ, आप लोग किसी अमंगल की बात अपने मन से निकाल दें ।"

"किन्तु हम्मीर ! तुम नहीं जानते कि चित्तौड़ नरेश मालदेव ने हमारे साथ छल किया है । उसने जान-बूझकर विधवा कन्या का संबंध भेजा है । तुम्हारे जैसे वीर और प्रतिष्ठित राजकुमार के लिए विधवा से संबंध करना शोभा नहीं देता ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हम्मीर ! युद्ध ही करना है तो हम तैयार हैं पर हम इस पक्ष में कभी नहीं कि आपका संबंध एक ऐसी कन्या से हो जो पहले ही किसी को वरण कर अपवित्र हो चुकी है ।" अजयसिंह ने दृढ़ शब्दों में कहा और सामंतों ने उनका अनुमोदन किया ।

पर हम्मीर उस धातु के बने नहीं थे जो किसी भी समय, कैसे भी मोड़े और झुकाये जा सकते । हम्मीर किसी सिद्धांत को देर से स्वीकार करते थे और एक बार उसमें सत्य और आदर्श की रक्षा देख लेते तो उसके लिए ऐसा हठ करते कि फिर सारा संसार एक तरफ हो जाता तो भी वचन से पीछे न हटते । 'हम्मीर हठ' उन दिनों जन-साधारण का दैनिक बोल बन गया था ।

हम्मीर देव ने कहा-"काका सा ! पुरुष जब चार-चार रानियाँ लाकर राजमहलों में डाल देता है तब भी अपवित्र नहीं होता । फिर नारी एक ऐसी अवस्था में जबकि उसे सहारे की आवश्यकता होती है और इस निमित्त उसका विवाह कर दिया जाता है, तो वही अपवित्र क्यों हो जायेगी । मान्यतायें मनुष्य ने बनाई हैं पर उनमें केवल वही बातें मान्य हो सकती हैं जिनका कुछ विवेकजन्य औचित्य भी हो । विधवाएँ अपवित्र और अमंगल होती हैं-यह कोई तर्क नहीं, सत्य बात तो यह है, यदि वह निःसंतान हो तो सबसे पहले सहारे की अधिकारिणी भी वही है ।"

हम्मीर के हठ के आगे किसी की एक न चली । वह लगन मंडप पर जा पहुँचे और संबंध कर ही लिया । सैनिक जो मेवाड़ में युद्ध करने गए थे, वह बराती बनकर लौटे । मंगलमुखी ने उस दिन पूर्ण श्रृंगार किया पर उसे ऐसा लग रहा था जैसे महाराणा हम्मीर उसके साथ छल तो नहीं कर रहे । समाज ने विधवा जीवन में जो आत्महीनता लाद दी है मंगलमुखी उससे वंचित नहीं थी । पर उसे शीघ्र ही मालूम हो गया कि हम्मीर ने यह संबंध हठ वश नहीं मानवीय करुणा और कृतज्ञता के रूप में ही किया था । उसने हम्मीर देव को शासन व्यवस्था में वह सहयोग प्रदान किया कि एक दिन बिना किसी द्वंद्व और रक्तपात के ही राजा हम्मीर देव मेवाड़ के शासक बन बैठे । पहले जो लोग कहा करते थे कि विधवा से विवाह हम्मीर के अमंगल का सूचक है वही पीछे कहने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लगे-विधवा कभी अमंगल नहीं होती । उसे मानवीय सम्मान मिले तो वह किसी भी योग्य जीवन साथी के कर्तव्यों का पालन कर सकती है । विधवा विवाह का आज विरोध करने वाले इतिहास के इस उदाहरण से सबक क्यों नहीं लेते ?

राष्ट्र का सच्चा प्रहरी

दशाब्दियों पूर्व देश छोटे-छोटे राज्यों में बँटा हुआ था । छोटे-छोटे प्रदेशों के राजा आपस में आए दिन लड़ते रहते थे । अकारण भी उनमें युद्ध छिड़ जाते तथा अगणित व्यक्तियों को अहंप्रेरित उस संघर्ष के कारण जान से हाथ धोना पड़ता था । उन दिनों तमिल प्रदेश भी दो राज्यों में विभाजित था । एक का राजा था विल्लवलवन तथा दूसरे का मलयमान । दोनों एक दूसरे के कट्टर शत्रु बन गए थे । अचानक युद्ध छिड़ा जिसमें मलयमान हारकर भाग निकला । पर बदले की आग में विल्लवलवन बुरी तरह जल रहा था । विदग्ध अंतःकरण की संवेदनाएँ उस आतप से जल कर समाप्त हो गयीं । स्थानापन्न बनीं निष्ठुरता और बर्बरता ।

विल्लवलवन ने शत्रु प्रदेश के नर-नारियों, बच्चों को मरवाना शुरू किया । उन मासूमों को हाथियों के पैरों तले कुचलवा दिया जाता था । नित्य ही यह अमानवीय कृत्य चलने लगा । उनके बीच उस राजा का क्रूर अट्टहास गूँजता था । सर्वत्र भय का, आतंक का, निराशा का वातावरण बन गया । कब, किस बेगुनाह की बारी आ जाय, यह किसी को नहीं मालूम था । विल्लवलवन की प्रजा भी मूक दर्शक की भाँति वह आसुरी लीला देखती रहती पर किसी में साहस न था कि वह उस अमानवीय कृत्य का विरोध कर सके । शत्रुता तो मलयमान से थी, निरीह, निरपराध लोगों को मारने से क्या लाभ, इस बात की पीड़ा तो हर व्यक्ति के मन में उठती थी, पर उनमें से किसी में साहस नहीं उभर रहा था कि उसे व्यक्त कर सकें ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उस दिन मलयमान के तीन छोटे बच्चे शत्रु सैनिकों के हाथ पड़ गए । राजा के सामने लाए गए । 'इन्हें मस्त पागल हाथी के पाँवों तले कुचलवा दिया जाय'-उसने सैनिकों को आदेश दिया । बच्चे उस आदेश को सुनकर फूट-फूट कर रोने लगे पर उसे थोड़ी-सी भी दया नहीं आयी ।

एक विशाल मैदान में भारी भीड़ उस हृदय विदारक दृश्य को देखने के लिए एकत्रित थी । उन मासूमों को देखकर सैनिकों का हृदय भी द्रवित हो उठा पर उनके सामने विवशता थी । चाहते हुए भी कुछ नहीं कर सकते थे ।

पागल हाथी को अब छोड़ा जा रहा था । सैनिक बच्चों को खींचकर मैदान में ले आए थे । बड़े की आयु बारह वर्ष, मध्य की दस व छोटे की छः वर्ष थी । दर्शक सांस रोके वह दृश्य देख रहे थे । अनेक ने भयभीत होकर आँखें बंद कर लीं थीं ।

सैनिक अब हाथी का रस्सा खोलने वाले ही थे । इतने में ही एक कड़कदार आवाज गूँजी-"ठहरो !"

सैनिक रुक गए । जिधर से आवाज गूँजी थी, सबकी निगाह उस दिशा में घूम गयी । सबने देखा वे राजकवि कोबूरे किलाट थे । उनका चेहरा तमतमाया हुआ था । उस समय वे साक्षात् दुर्वासा की प्रतिमूर्ति दिखाई पड़ रहे थे । दरबार में उनकी प्रतिष्ठा थी, साथ ही प्रभाव भी ।

तेज चाल से चलते हुए वे राजा के सिंहासन तक पहुँचे । सम्मान में राजा उठ खड़े हुए । अभिवादन किया तथा पूछा-"राजकवि ! आप नाराज दिख रहे हैं । मेरा अपराध क्या है ?"

कवि ने थोड़ा संयत स्वर में कहा-"राजन ! निरीह लोगों, मासूम बच्चों को व्यक्तिगत ईर्ष्यावश मरवा देना, इससे बढ़कर और कौन सा अपराध हो सकता है । बहुत हो चुका यह नर संहार । अब तो अपने को सँभालिए । मारना ही है तो पहले हाथी के पैरों के नीचे मुझे आने दीजिए ।" राजकवि के ओज भरे शब्दों ने राजा को अपनी गलती का बोध कराया । उन्होंने कवि से क्षमा माँगी । बच्चों की जान बची तथा जनता को राहत मिली । पर यह सब संभव हुआ महाकवि के सत्साहस के फलस्वरूप ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संत की सहिष्णुता

एक जुलाहा रहता था किसी नगर में । स्वभाव से अत्यंत शांत, नम्र तथा उदार । क्रोध तो कभी आता ही न था । एक बार कुछ लड़कों को शरारत सूझी । वे सब उस जुलाहे के पास यह सोचकर गए कि देखें इसे गुस्सा कैसे नहीं आता ? उनमें एक लड़का धनवान् माता-पिता का पुत्र था । वहाँ पहुँचकर वह बोला-"यह साड़ी कितने की दोगे ?" जुलाहे ने कहा-"दो रुपये में ।"

तब लड़के ने चिढ़ाने के उद्देश्य से साड़ी के दो टुकड़े कर दिए और एक टुकड़ा हाथ में लेकर कहा-"मुझे पूरी साड़ी नहीं चाहिए, आधी चाहिए । इसका दाम क्या है ?" जुलाहे ने बड़ी शांति से कहा-"एक रुपया ।"

लड़के ने उस टुकड़े के भी दो भाग करते हुए पूछा-"और इसका दाम ?"

संत अब भी शांत थे । उन्होंने बताया-"आठ आना ।"

लड़का इसी प्रकार साड़ी के टुकड़े पर टुकड़े करता गया । अंत में बोला-"अब मुझे यह साड़ी नहीं लेनी । यह टुकड़े मेरे किस काम के ?"

जुलाहे ने उसी गंभीर शांति के साथ कहा-"बेटे ! अब यह टुकड़े तुम्हारे ही क्या, किसी के भी काम के नहीं रहे ।"

अब लड़के को कुछ शर्म आयी और वह कहने लगा-"मैंने आपका नुकसान किया है । अत: मैं आपकी साड़ी का दाम दिए देता हूँ ।"

पर संत जुलाहे ने कहा कि जब आपने साड़ी ली ही नहीं तब मैं आपसे पैसे कैसे ले सकता हूँ ।

लड़के का धनाभिमान जागा और वह कहने लगा कि मैं बहुत अमीर आदमी हूँ । तुम गरीब हो । मैं रुपये दे दूँगा तो मुझे कुछ नहीं अखरेगा । पर तुम यह घाटा कैसे सह सकोगे ? और नुकसान मैंने किया है तो घाटा भी मुझे ही पूरा करना चाहिए ।

संत अब कुछ मुस्कराये और कहने लगे-"तुम यह घाटा पूरा नहीं कर सकते ! सोचो, किसान का कितना श्रम लगा तब कपास पैदा हुई । फिर मेरी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्त्री ने अपनी मेहनत से उस कपास को बीना और सूत काता । फिर मैंने उसे रँगा और बुना । इतनी मेहनत तभी सफल होती जब इसे कोई पहनता, इससे लाभ उठाता, इसका उपयोग करता । पर तुमने उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले । रुपये से यह घाटा कैसे पूरा होगा ?'' संत जुलाहे की आवाज में आक्रोश के स्थान पर अत्यंत दयार्द्र सौम्यता थी । लड़का शर्म से पानी-पानी हो गया । उसकी आँखें भर आईं और वह संत के पैरों में गिर गया ।

जुलाहे ने बड़े प्यार से उसे उठाकर पीठ पर हाथ फिराते हुए कहा- ''बेटा ! यदि मैं तुम्हारे रुपये ले लेता, तो हो सकता है उससे मेरा बहुत काम चल जाता । पर तुम्हारी जिंदगी का वही हाल होता जो इस साड़ी का हुआ । कोई भी उससे लाभान्वित नहीं होता । साड़ी एक गयी, मैं दूसरी बना लूँगा । पर जिंदगी एक बार अहंकार में नष्ट हो गयी तो दूसरी कहाँ से लाओगे तुम ? तुम्हारा यह पश्चाताप ही मेरे लिए बहुत कीमती है ।''

लड़का तथा उसके साथी बहुत शर्मिंदा हुए ।

यह जुलाहे थे दक्षिण भारत के महान् संत तिरुवल्लुवर । इनका लिखा हुआ ग्रंथ 'कुरल' आज दो हजार वर्ष बाद भी बड़ी श्रद्धा से पढ़ा जाता है ।

परिश्रम की कमाई में आस्थावान रैदास

भक्त रैदास के बारे में एक किंवदंती इस प्रकार है । रैदास फटे जूते की सिलाई में ऐसे तल्लीन थे कि सामने कौन खड़ा है-इसका उन्हें पता न चला । आगंतुक भी कब तक प्रतीक्षा करता, उसने खाँसकर रैदास का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया । रैदास ने दृष्टि ऊपर उठाई । सामने एक भद्र पुरुष को प्रतीक्षारत देख वह हड़बड़ा कर खड़े हो गए और विनम्र शब्दों में बोले-''क्षमा कीजिए । मेरा ध्यान काम में था । मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?''

क्षमा की बात सुनते ही आगंतुक को हँसी आ गई-''मैं तो अपने ही काम से आया हूँ अतः क्षमा का प्रश्न ही क्या ? मेरे पास पारस है । मैं आगे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुछ आवश्यक कार्य से जा रहा हूँ । कहीं खो न जाये इसलिए इसे अपने पास रख लो । मैं शाम तक लौटूँगा तब वापस ले लूँगा । हाँ, एक बात और । इतना तो तुम जानते ही हो कि पारस के स्पर्श से लौह धातु स्वर्ण में बदल जाती है । यदि तुम चाहो तो अपनी राँपी को स्पर्श कराकर सोने का बना सकते हो । इसमें मुझे कोई आपत्ति न होगी ।"

"पारस आप शौक से छोड़ जाइये और जब लौटकर आवें तब साथ लेते जाइये । इतना कार्य तो मैं आपका कर सकता हूँ पर दूसरी आज्ञा मानने के लिए मैं तैयार नहीं हूँ । मैं ठहरा चमार । मरे पशुओं की खाल को साफ करता हूँ, फिर उसे काटकर जूते बनाता हूँ । इस काम में कड़ी धातु के औजार की ही आवश्यकता पड़ती है । सोना नरम होता है । यदि उसकी राँपी बनाऊँगा तो एक ही झटके में मुड़ जायेगी और दिन भर की मजदूरी से वंचित रह जाऊँगा ।"

"सोने को बेचकर तो तुम दैनिक जीवन के उपयोग की अनेक वस्तुएँ खरीद सकते हो । फिर सड़क के किनारे बैठकर इस धंधे को करने की भी आवश्यकता न रहेगी । कोई भी इज्जतदार व्यवसाय की शुरूआत कर सकते हो"-आगंतुक ने पुनः अपने आग्रह को दुहराया ।

यह आगंतुक कोई साधारण व्यक्ति नहीं वरन् देवराज इंद्र थे । दीर्घकाल से वह रैदास की आदर्श भक्ति और निर्लोभी स्वभाव के संबंध में अनेक चर्चाएँ सुनते आ रहे थे । आज उनकी इच्छा हुई कि ऐसे भक्त के दर्शन करने का सुअवसर प्राप्त किया जाये । वे वेष बदल कर उनकी परीक्षा करने ही आए थे ।

रैदास ने पारस लौटाते हुए स्पष्ट शब्दों में कह दिया-"महोदय ! मैं ईमानदारी और परिश्रम की कमाई में ही विश्वास करता हूँ । सुबह से शाम तक किए गए कर्मों के बदले जो पारिश्रमिक मिलता है वही मेरे लिए पर्याप्त है । इस प्रकार अनुदान में मिली कोई वस्तु मुझे स्वीकार नहीं ।"

अब इंद्र क्या कहते ? पारस वापस ले लिया और मन ही मन भक्त के निर्लोभी स्वभाव की सराहना करते हुए लौट गए । भक्ति और आस्तिकता ईश्वर पर निर्भरता तो लाती है परंतु व्यक्ति की परिश्रम और पुरुषार्थ में निष्ठा छीनती नहीं, उसे सुदृढ़ ही बनाती है । प्रायः देखा जाता है कि आलसी और अकर्मण्य लोग ईश्वर भक्ति का बाना पहनकर अपने भोजन और निर्वाह की आवश्यकतायें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भी ईश्वर से पूरी होने की आशा करते हैं । स्पष्ट ही यह स्वयं को ईश्वर का सेवक बनाना नहीं है वरन् आशय यही है कि ईश्वर हमारा सेवक बन जाय । ऐसे व्यक्तियों को ईश्वर का प्रवंचक ही कहा जायगा । ईश्वर के प्रति विश्वास तो लौकिक जीवन में भी पुरुषार्थवादी और श्रमशील बनाता है । दूसरे निर्लिप्त भक्ति भी रैदास के आदर्श द्वारा व्यक्त होती है जो यह प्रतिपादित करती है कि सच्चे ईश्वर भक्त को अपने प्रयत्न और पुरुषार्थ के बल पर जो मिले उसी में संतुष्ट रहना चाहिए । मुफ्त के, बिना परिश्रम से अनायास ही आ उपस्थित हुए लाभों की उसे न आवश्यकता होती है और न अपेक्षा रहती है ।

आत्म-विश्लेषण से सुधार

पारस से लोहे का स्पर्श करने से सोना बनने की उक्ति की पृष्ठभूमि में कदाचित् यही तथ्य निहित होगा कि दुष्ट हृदय, समाज विरोधी व्यक्ति यदि अच्छे व्यक्तियों के संसर्ग-सान्निध्य में आ जाँय तो उसकी जीवन धारा ही बदल जाय, उसका जीवन स्वयं के लिए भी व समाज के लिए भी बड़ा उपयोगी बन जाय ।

श्री नानक देव इसी प्रकार के एक अत्यंत ही उच्च कोटि के संत थे । उनके पास जो भी आता वह उनसे कुछ न कुछ प्रेरणा लेकर अवश्य ही जाता ।

भीखम डाकू के जीवन को भी नानक देव ने स्पर्श कर सोना बना दिया । घटना इस प्रकार घटित हुई । एक दिन संत एक सभा को संबोधित कर रहे थे । प्रवचन का विषय था-'अस्तेय व अहिंसा ।' सभा खचाखच भरी थी । अपने प्रवचन में गुरु नानक ने कहा-"भगवान ने जिसे जितना दिया है उसी में वह संतोष करे । मनुष्य को इस प्रकार के अपने विचार व क्रिया-पद्धति बनानी चाहिए कि अपने स्वयं के परिश्रम से नैतिकता पूर्वक जो अर्जन हो उसी के अनुरूप अपना जीवन स्तर बनावें । अपनी योग्यता व परिश्रम से अर्जित धन से अधिक व्यय करना स्तेय है । इससे मनुष्य में अनैतिक अर्जन की कामना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

घर करती है तथा अनैतिक अर्जन ही स्तेय है । अंधाधुंध अर्जन के लिए मनुष्य फिर अन्याय-अत्याचारपूर्ण कार्य करता है, दूसरों के साधनों-सुविधाओं का अपहरण करता है व अपने लिए उनका उपयोग करता है । अपना पेट भरने एवं अपने इस नश्वर शरीर के लिए मनुष्य मनुष्य का अपहरण करे, निर्दोष-निहत्थे प्रणियों से उनकी सुख सुविधाएँ छीनकर और उन्हें अपनी अधिकारपूर्ण सम्पत्ति से विहीन कर उन्हें शारीरिक व मानसिक क्षति पहुँचाये इससे बड़ा कुकर्म और क्या हो सकता है । एक दिन मरना सभी को है । जब इस तरह के मनुष्य मरकर भगवान् के सम्मुख उपस्थित होंगे तो क्या उत्तर देंगे । हमें चाहिए हम किसी की हिंसा न करें, जहाँ तक बने दूसरों की सेवा ही करें और यदि इस शरीर से हम किसी को कोई सुख न दें, न सही, पर दु:ख भी न दें ।"

इस सभा में भीखम डाकू भी उपस्थित था । इन विचारों का उस पर बड़ा प्रभाव हुआ । उसकी आत्मा उसे विचलित करने लगी, धिक्कारने लगी कि वह कितना नीच व घृणित काम करता है । वह डाकू तुरंत ही संत के पास गया, उनके चरणों में नतमस्तक हो उसने कहा-"महाराज ! मुझे अपने कर्मों पर पश्चाताप हो रहा है । आप मुझे कोई ऐसा रास्ता बतायें कि मेरी कुकर्म करने की, लूटपाट करने, डाका डालने की आदत छूट जाय ।" गुरु नानक ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा-"वत्स ! तुम जो बुरा काम करते हो उसे छोड़ दो ।" भीखम डाकू ने कहा-"स्वामी जी ! यदि मैं यह काम छोड़ दूँगा तो मेरी जीविका कैसे चलेगी ?" नानक ने मार्ग बताया-"अच्छा, तुम यह मत छोड़ो परंतु एक काम करो-तुम नित्य ही सोने के पहले मेरे पास आकर बताया करो कि तुमने क्या-क्या काम किए हैं ।" भीखम तैयार हो गया ।

परंतु भीखम डाकू तीन दिन तक नानक के पास नहीं आया । वह इन दिनों बराबर यही सोचता रहा कि उसके द्वारा किए जाने वाले कुकृत्य इतने घृणित हैं कि उसे संत को बताने में लज्जा होती है । भीखम डाकू के मन में उभरने वाले ये ही विचार उसके परिष्कार का प्रारंभ था । उसने संकल्प किया कि इस तरह के लज्जाप्रद काम वह भविष्य में कदापि नहीं करेगा । यह निश्चय कर वह नानक देव के पास गया व उसने अपने पूरे कुकृत्यों का विवरण प्रस्तुत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर दिया । साथ ही उसने वचन दिया कि वह अब कदापि ऐसे कार्य नहीं करेगा ।

भीखम के व्यक्तित्व में इस परिवर्तन के पीछे थी तो उसके अंतर्मन द्वारा किए गए आत्म-विश्लेषण के पश्चात उत्पन्न उसकी दृढ़ संकल्पशीलता ही । परंतु सहारा उसे था एक संत के संसर्ग से प्राप्त आत्म-शक्ति का । इसे चाहे किसी की कृपा माना जाय अथवा अनुदान परंतु थी वह सशक्त प्रेरणा ही जो किसी जीवंत अंतःकरण, संत हृदय और उदार मन से ही प्रस्फुटित हो सकती है, हर किसी से नहीं ।

आत्म-बोध के स्वर

गुरु नानक अरब और मुस्लिम देशों में घूम-घूम कर मानवता और प्रेम का संदेश सुना रहे थे । अपने शिष्य के साथ वे मुल्तान नगर की सीमा पर पहुँचे । तभी एक हृष्ट-पुष्ट शुभ्र श्वेत वस्त्रधारी पुरुष उन दोनों के सामने आकर खड़ा हो गया और बोला-"आप साहबान हमारे घर चलिए और हमारे मालिक के बनवाये आराम घर में डेरा डालिए । वहाँ आपको सभी प्रकार की सुविधा मिलेगी ।" और वह गुरु नानक का सामान अपने नौकरों के सिर पर उठवा कर चल पड़ा ।

नगर के प्रवेश द्वार के पास ही एक सुंदर हवेली बनी हुई थी । बड़े-बड़े हवादार साफ-सुथरे कमरे । बढ़िया साज-सज्जा देखकर लगता था कि यह किसी बहुत बड़े रईस आदमी की इमारत होगी ।

हवेली में घुसते ही दालान में एक तख्त पर सफेद कपड़ों में एक सफेद दाढ़ी वाला बुड्ढा आदमी गद्दे पर मसनद के सहारे बैठा मिला । उसके हाथ में चमकीले और बड़े-बड़े मनकों की एक रंगीन माला थी जिसे फेरते हुए वह कुछ जाप कर रहा था । मरदाना यह सब देखकर चकित रह गया ।

गुरु नानक को पहुँचाने वाला आदमी उस बुड्ढे के पास जाकर जल्दी से फुसफुसाया-"आज तो एक बूढ़े बाबा और उसके चेले के अलावा कोई अन्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शैली से इतने अधिक प्रभावित हुए कि उनने वहाँ 'इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ सिविलाइजेशन' नामक संस्था की स्थापना कर डाली ।

आज हमें राजनैतिक स्वतंत्रता भले ही मिल गयी हो, पर हमारी मानसिक गुलामी अभी भी बनी हुई है । हम अवांछनयीताओं, कुप्रथाओं, अनैतिकता के भँवरजाल में अब भी जकड़े हुए हैं, जिससे उबरना अतीव आवश्यक है । ऐसा तभी संभव हो सकेगा, जब साहित्यकार अपनी कला का सदुपयोग करते हुए अपने युग और समाज को मार्गदर्शन देने के लिए स्वयं को साहित्य सृजन में नियोजित करें । तभी सांस्कृतिक गौरव के पुनरुत्थान की परंपरा को आगे बढ़ाया जा सकता है ।

यह साहित्यकार और कोई नहीं वरन् गोवा के अमर सपूत टेलो डि मैस्कारेन्हास थे, जिन्हें गोवा वासी 'गोवानी संत' के नाम से पुकारते हैं । कार्य की अधिकता के कारण उत्तरार्द्ध जीवन में जब उन्हें एक सहयोगी की आवश्यकता पड़ी, तो एल्सा नामक एक गोवा वासिनी समाज सेविका से इस शर्त पर शादी कर ली कि हम बच्चे पैदा करने की तुम्हारी इच्छा पूरी नहीं कर सकेंगे । एल्सा तैयार हो गयी । बाद में एल्सा की प्रेरणा से वे 'एमुल्हर हिन्दू' नामक नारी उत्थान संबंधी पुस्तक लिखने में सफल हुए ।



मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जुट पड़ता । अनेक रातों के अथक परिश्रम से उसने एक पुस्तक लिखी- 'गोआ-माई बी लवैड लैंड' ।

आज रात वह उसी पुस्तक के संशोधन में लगा था और सोचता जा रहा था कि इसकी छपाई का प्रबंध कैसे हो ? क्योंकि वह अनेक प्रकाशकों के पास चक्कर लगा चुका था, पर पुस्तक का कथानक सुनकर सब छापने से इन्कार कर देते । तभी उसके मस्तिष्क में विचार आया कि क्यों न अपनी पैतृक सम्पत्ति का इसके लिए प्रयोग किया जाय ? समाज की सम्पदा समाज के काम आ जाये, तो इसमें हर्ज क्या है ? रही अपने गुजारे की बात, तो इस छः इंच के पेट को तो तनिक से परिश्रम से भरा जा सकता है ।

चार एकड़ जमीन और कुछ सोने के गहने यही उसकी कुल दौलत थी । उसे बेचकर जब पुस्तक छपवायी, तो उसने क्रांति मचा दी । जन-जन में वह लोकप्रिय हुई । उसमें लगा धन भी वापस आ गया । पुस्तक के प्रतिपादन इतने सशक्त और सारगर्भित थे कि उसको पढ़कर मानों मुर्दों में भी प्राण आ गए हों । समस्त गोवा चैतन्य हो उठा । उसने पराधीनता की हानियों को समझा और पुर्तगाल सरकार के विरुद्ध मुहिम छेड़ दी । इसी के फलस्वरूप सन् १९६२ में पुर्तगाल सरकार को गोवा छोड़ना पड़ा ।

गोवा स्वतंत्र हुआ । युवक को अपनी उपलब्धियों से प्रोत्साहन मिला, तो अब उसने जन्मभूमि के सांस्कृतिक पुनरुत्थान की जिम्मेदारी अपने मजबूत कंधों पर उठायी । इसके लिए उसने 'इंडियन इंस्टीट्यूट' नामक एक संगठन की स्थापना की और उसके माध्यम से 'इंडियानोवा' नामक एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया । इसका मूलभूत उद्देश्य भारतीय संस्कृति की महान् परंपराओं से गोआ वासियों को अवगत कराना था, ताकि लोग देव-संस्कृति की महानता को जानते-समझते हुए अपने चिंतन, चरित्र और व्यवहार में तदनुरूप परिवर्तन ला सकें । जब इस पत्रिका की एक प्रति महान दार्शनिक रोम्यां रोलां के हाथ लगी, तो उन्होंने उसके विचारों से प्रभावित होकर अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा-"जिस देश में ऐसे सपूत पैदा हों, भला वह देश पराधीन कैसे रह सकता है ? पराधीनता चाहे राजनैतिक हो अथवा सांस्कृतिक, वह वहाँ टिक ही नहीं सकती ।" फ्रांस के दार्शनिक सिल्वेन लेवी इस पत्रिका की विचार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बादशाह की बात याद आयी और विचार किया कि क्यों न इस अवसर पर बादशाह को परख लिया जाय ।

वह राजधानी आया और बादशाह से मिला । बादशाह ने देखते ही पहचान लिया और उसका बड़ा स्वागत किया । राजमहल में ठहराया, सभी साधन-सुविधाएँ अपनी देख-रेख में उपलब्ध करायीं । रात में विश्राम के बाद सुबह मिलने के लिए कहकर अपने कक्ष में चला गया । सुबह किसान जब बादशाह के निजी कक्ष में पहुँचा तो देखा अकबर प्रार्थना कर रहा था-"खुदा ! मुझे शक्ति-सामर्थ्य दे और बुद्धि दे ताकि मैं तुम्हारे पुत्रों की सेवा कर सकूँ ।" ये शब्द किसान के कानों में पड़े । बादशाह की प्रार्थना समाप्त हो ही चुकी थी कि इतना सुनकर किसान उल्टे पाँवों भागा ।

बादशाह ने देखा तो दौड़कर उसे रोका । कारण पूछने पर बताया-"जहाँपनाह ! मैं अपनी बेटी के लिए आपसे सहायता माँगने आया था । परंतु देखा कि आप भी अल्लाह से माँगते हो । इसलिए अब मुझे भी उसी से माँगना चाहिए । मेरा उस पर विश्वास है, लेकिन मैं डिग रहा था, सो बच गया ।"

एक संत जिसने गोवा को स्वतंत्र कराया

सन् १९५० की एक रात । एक युवक अपने छोटे से कमरे में दीपक के मद्धिम प्रकाश में बड़ी तन्मयतापूर्वक कुछ लिखने में संलग्न था । देखने से ऐसा प्रतीत होता था, मानों कोई ऋषि ध्यान की अतल गहराई में उतर गया हो और पास-पड़ोस में होने वाली किसी भी हलचल से अनभिज्ञ हो, क्योंकि कमरे के पास के नुक्कड़ पर अक्सर लड़के धमा चौकड़ी मचाते और शोरगुल करते हुए अपने खेल में मस्त रहते । पर वह युवक इन सब गतिविधियों से अप्रभावित होकर अपनी साहित्य साधना में निरत रहता । प्रतिदिन का यही उसका क्रम था । दिन में स्वयं कालेज में पढ़ता और रात में साहित्य सृजन में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बादशाह थकते जा रहे थे । ऐसी स्थिति में राजधानी ही वापस लौट जाना उचित समझा । जब वापस लौटने लगे तो महसूस हुआ कि रास्ता भटक गये हैं । इस आभास ने उन्हें और भी व्यग्र कर दिया । अब तो लाख प्रयत्न करने पर भी रास्ता याद नहीं पढ़ रहा था । इधर थकान के साथ-साथ भूख-प्यास भी बढ़ रही थी । सो उन्होंने सोचा कि इसी वन में यदि कोई झोंपड़ी या आदमी दिखाई दे तो उसकी सहायता से भोजन, पानी और विश्राम की व्यवस्था करें ।

बहुत देर तक खोजने के बाद उन्हें एक खेत और उसमें बनी झोंपड़ी दिखाई दी । जा पहुँचे वहीं और देखा वहाँ एक फटेहाल किसान रहता है । उससे जाकर कहा-"सुनो, मैं इस देश का बादशाह अकबर हूँ ।"

"जो भी हो । परंतु इस समय तुम थके हुए और भूखे-प्यासे दिखाई दे रहे हो"-किसान जैसे अकबर के प्रभाव से निर्लिप्त ही था । उसे बादशाह होने न होने से कोई मतलब ही नहीं ।

अकबर ने कहा-"तुमने बिल्कुल ठीक समझा । क्या तुम्हारे पास खाने-पीने की कोई सामग्री मिल सकती है ।"

"हाँ-हाँ, परंतु तुम थोड़ा सुस्ता लो । क्योंकि धूप में बड़ी देर तक रह कर आए हो और ऐसी दशा में तुरंत पानी पीना या कुछ खा लेना अच्छा नहीं रहता"-किसान ने कहा और बादशाह उसकी सदाशयता-सच्चिंतना से बड़ा प्रभावित हुआ ।

सुस्ताने के बाद किसान ने बादशाह को रूखी-सूखी रोटियाँ खिलायीं और ठंडा जल दिया । इस अत्यंत सादे किन्तु भाव भरे आतिथ्य के आगे बादशाह को अपने बड़े-बड़े राजभोज फीके लगे । जब वह चलने लगे तो किसान के प्रति धन्यवाद व्यक्त करते हुए बोले-"देखो, मेरे योग्य कोई कार्य हो तो राजधानी आने और मुझसे मिलने में संकोच मत करना । तुम्हारी सेवा का अवसर पाकर मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी ।" बादशाह ने कहा और चल दिया ।

इस घटना को कुछ माह बीत गए । किसान को अपनी बेटी का विवाह करने के लिए धन की आवश्यकता हुई । पहले तो उसने सोचा कि खेत और जमीन पर वह कर्ज ले ले तथा फसल आने पर उसे चुकाता रहे । बाद में उसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बाद भी यवन सेना वीर सम्राट् हेमू के सम्मुख टिक न सकी । पैर उखड़ गए, सिपाही जान बचाकर भागने लगे ।

भागती हुई मुगल सेना को ललकारते हुए १४ वर्षीय किशोर अकबर ने कहा-"दोस्तों ! पीछे मुड़ो, अब हमें कोई नहीं हरा सकता । विजय मंत्र मेरे हाथ लग चुका है ।" बैरमखाँ तो यह दृश्य देखकर हक्का-बक्का ही रह गया ।

सेना अपने स्वामी को देखते ही ठहर गई । युद्ध फिर गति पकड़ने लगा । तभी सनसनाता हुआ एक तीर आया और अकबर की बाँई भुजा में बिंध गया । चुभे हुए तीर की ओर एक दृष्टि डालकर अकबर ने दूर तक दृष्टि दौड़ाई । मालूम हो गया कि उसका संधान स्वयं सम्राट् हेमचंद्र ने किया है ।

सेनापति बैरम खाँ और अकबर की सेना हतप्रभ हो उससे पूर्व ही अकबर ने दाहिने हाथ से चुभे हुए तीर को निकाल लिया । इधर खून की धार फूटी, उधर धनुष से वही तीर सनसनाता हुआ आगे बढ़ा और हेमू की आँख में जा धँसा । हेमू अपने घोड़े से जमीन में जा गिरा ।

पाँसा पलट गया । मुगल उत्साह से भर गए । अकबर की तरह वे भी सुनिश्चित विश्वास के साथ युद्ध करने लगे और विजयश्री उनके हाथ लगी ।

इतिहासकार कहते हैं कि विजय का श्रेय बैरम खाँ को है पर दूरदर्शी मुगलों की इस विजय को साहस की विजय मानते हैं जो अकबर को राजपूतों से उपहार में मिला । सच है साहस ही सर्वोपरि समर्थता है ।

बादशाह भी माँगता है

सम्राट् अकबर एक बार जंगल में आखेट पर निकले । यों तो वे जब भी किसी शिकार पर जाया करते थे तो काफी अंगरक्षक और सैनिक उनके साथ रहते थे लेकिन जब कभी जी में आता तो अकेले भी निकल जाया करते । घने जंगल थे उस समय इसलिए शिकार भी आसानी से मिल जाया करता, ज्यादा दूर नहीं जाना पड़ता । परंतु उस दिन कुछ ऐसा संयोग बना कि बादशाह को शिकार की तलाश में दूर तक जाना पड़ा फिर भी शिकार नहीं मिला ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साहस सर्वोपरि समर्थता

बैरमखाँ के प्रस्ताव का समर्थन करते हुए माँ हमीदा ने कहा-"बेटा ! आपत्ति काल में आत्म रक्षा के लिए जो भी उपाय सामने हो करना चाहिए । तुम अभी किशोर हो, युद्ध तुम्हारे वश की बात नहीं ।"

सेनापति का आदेश और माँ का समर्थन । १४ वर्षीय बालक अकबर ने राजकुमारियों वाला जनाना वेष धारण कर लिया । रेशमी सलवार, कुरती, हाथ में मेंहदी और चूड़ियाँ, सिर चूनर से ढका हुआ । अकबर अपनी माँ के साथ पालकी में बैठा दिया गया । कहारों को पालकी उठाकर चलने की आज्ञा दे दी गई ।

"हम लोग कहाँ जायेंगे माँ"-अकबर ने हमीदा से प्रश्न किया । "दिल्ली के उस रास्ते से बच निकलेंगे जिस रास्ते जनानी पालकियाँ जाती हैं । हम लोग बचकर निकल चलेंगे, राजपूत स्त्रियों पर हथियार नहीं उठाते बेटा । इसीलिए तुम्हें स्त्री वेष धारण कराना पड़ा है । इसका तुम बिल्कुल दु:ख मत करो ।"

"अच्छा एक बात बताओ माँ ! मैं युद्ध क्यों नहीं कर सकता ? राजपूत मुट्ठी भर होते हैं पर वे जीतते क्यों हैं ।"

हमीदा ने दीर्घ नि:श्वास छोड़ी और उत्तर दिया-"बेटा, तुम्हारी आयु अभी छोटी है, परिपक्व न होने तक तुम्हारा लड़ना उचित नहीं है । राजपूत तो बड़े साहसी होते हैं बेटा ! उन्हें बचपन से ही वीरता का पाठ पढ़ाया जाता है, लड़ना उनके लिए खेल है । इसीलिए वे सदैव विजयी रहते हैं ।"

"राजपूत बड़े साहसी होते हैं, इसीलिए वे जीतते हैं"-एक पंक्ति के इस तथ्य ने अकबर के मन में बिजली जैसी शक्ति भर दी । इसका अर्थ यह हुआ कि विजय व्यक्ति को नहीं उसकी हिम्मत को मिला करती है । अकबर ने अनुमान लगाया और दूसरे ही क्षण तलवार हाथ में लिए वह पालकी से बाहर कूद पड़ा । कहार हक्के-बक्के रह गए । हमीदा की श्वाँस हलक में अटक गई ।

बैरमखाँ को जब तक खबर पहुँचे तब तक अकबर अपने नारी-परिधान उतारकर सैनिक वेष धारण कर चुका था । इधर बैरमखाँ के अनेक प्रयत्नों के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मुठभेड़ में सिपाही मारे गए, रसद लूट ली गई । इस सफलता ने उसका साहस बढ़ा दिया और उसके सहायकों की संख्या भी बढ़ गई ।

सरजूदास जंगलों में अपने साथियों सहित जा छिपे तथा जबलपुर-मिर्जापुर मार्ग व कलकत्ता-बंबई मार्ग पर आने-जाने वाली अंग्रेजी रसद, डाक व खजाना लूटकर अपनी शक्ति बढ़ा ली ।

थोड़े से साथियों के बल पर पूरे ८ वर्ष तक इस नर केसरी ने अंग्रेजों की नाकों में दम कर दिया । समय-कुसमय छावनियों पर धावा मारकर अंग्रेजी सैनिकों को मौत के घाट उतार देता तथा सरकारी रकम लूट लेता, उनके हिमायतियों को खुले आम दंड देता और वापस पहाड़ों में चला जाता ।

सात वर्षों तक अपने क्षेत्र का वह राजा ही बनकर रहा । अंग्रेजों के लिए वह हौवा बन गया था । सरकारी शासन व व्यवस्था उसके सामने कुछ माने ही नहीं रखती थी ।

जहाँ देश के लिए प्राण हथेली पर रखकर आततायियों से जूझने वाले सरजूदास जैसे सर्वस्व त्यागी होते हैं, वहाँ देश-द्रोही भी होते हैं । सात वर्ष तक जिस वीर की छाया भी अंग्रेज न पा सके उसे एक देश-द्रोही ने धोखे से सोते समय पकड़वा दिया ।

सरजूदास को कुछ वर्ष तक जबलपुर की कैद में रखा गया फिर मृत्यु दंड दिया गया । कमिश्नर अर्सिकन की पुत्री ने जब इसे हथकड़ी-बेड़ी में देखा तो उसकी वीरता के सम्मान में उसकी आँखों से आँसू निकल पड़े । यह देशभक्त के प्रति श्रद्धा के आँसू थे ।

खाने-खेलने की उम्र में अपनी सब सुख-सुविधाओं को त्यागकर अपनी आत्मा की पुकार पर मरने-जीने वाले इस वीर की कहानी जब तक इतिहास के पन्नों पर अंकित रहेगी समय की पुकार पर मरने-जीने वालों की कमी न रहेगी ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दमन करूँगा । आजादी के लिए अलख जगाऊँगा, न स्वयं चैन से बैठूँगा न आतताइयों को चैन से बैठने दूँगा ।

यों तो सन् ५७ की क्रांति में कई राजाओं ने भाग लिया था । उनमें विशुद्ध देश-प्रेम से प्रेरित होकर संघर्ष करने वाले सेनानायक कम ही थे अधिकांश देश प्रेम के साथ-साथ व्यक्तिगत स्वार्थ से प्रेरित होकर भी लड़े थे । सरजूदास तात्या टोपे की श्रेणी के क्रांतिकारी थे जो विशुद्ध देश प्रेम से प्रेरित होकर इस आग में कूद पड़े थे । उसने गढ़ के पुराने हथियारों को तेज कराना तथा नये हथियार बनवाना आरंभ कर दिया । युवकों को अपनी सेना में भर्ती होने के लिए तैयार करना आरंभ कर दिया ।

उन्हें अपने खर्च के लिए जबलपुर के कमिश्नर पर निर्भर रहना पड़ता था । उससे अधिक धन माँग नहीं सकते थे । अतः उन्होंने अपने वस्त्राभूषण तक बेचकर अपनी तैयारी में लगा दिए ।

तहसीलदार मीर साबित अली के कानों में जब यह भनक पड़ी तो वह सरजूदास को समझाने के लिए उसके पास पहुँचे । उसने कहा-"कुँवर जू, आप इन खतरनाक हथियारों से क्यों खेलते हैं जबकि हमने आपके साथ खेलने के लिए अन्य कई जीते-जागते खिलौने रख छोड़े हैं ।"

"मीर साहब ! यूँ ही बिगड़ रहे हैं, थोड़ी देखभाल करनी भी तो जरूरी थी ।" सरजूदास ने कहा । मीर ने ताड़ लिया कि अब शेर जाग चुका है पिंजड़े में बंद कर देना ही ठीक है । नहीं तो फिर काबू में नहीं आयेगा । उसने समझाने के स्वर में कहा-"कुँवर जू, जानते हो इसकी शिकायत कमिश्नर तक पहुँचे तो क्या होगा ?" सरजू ने देखा कि यह काइयाँ अब कुछ गुल खिलायेगा । उसने अपना मंतव्य उसे बता दिया, साथ ही उसे द्वंद्व युद्ध के लिए ललकारा । कुछ ही देर में मीर का माथा जमीन चाट रहा था ।

आतताइयों का प्रतिकार करना मानव धर्म है । सफल होने या असफल होने की चिंता करने वाला इस धर्म का पालन नहीं कर सकता । सरजूदास ने भी इस धर्म को अंगीकार किया था ।

मीर की मृत्यु का समाचार जब जबलपुर के डिप्टी कमिश्नर क्लार्क को मिला तो उसने सैनिकों को सरजूदास को बंदी बनाने भेजा । सरजूदास से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जब सिंह जाग उठा

विजय राघो गढ़ के अवयस्क महाराज के लिए सभी सुख-सुविधाओं का प्रबंध था । विलासी और अकर्मण्य बनाने के सभी साधन उपलब्ध थे । अंग्रेज यही चाहते थे कि भारतीय अपने व्यक्तिगत सुख-सुविधा व विलास में डूबे रहकर देश की रक्षा और स्वतंत्रता की ओर ध्यान न दें ।

किशोर महाराज सरजूदास को समय की बहती हवा से बचाने के लिए न तो विजय राघोगढ़ का परकोटा ही काफी था, न तहसीलदार मीर साबित अली का काइयाँपन और न राज्य का प्रबंधक जबलपुर का डिप्टी कमिश्नर कैप्टन क्लार्क ही ।

सन् १८५७ की क्रांति का समाचार इन सब प्राचीरों को फाँदकर किशोर सरजूदास के पास पहुँच चुका था । विलासिता से उसे बचपन से ही घृणा थी । वह अपने शरीर को आरामतलब नहीं कष्ट सहिष्णु बनाना चाहता था । उसने मीर साबित अली और कैप्टन क्लार्क के नहीं चाहते हुए भी घुड़सवारी तथा तलवार चलाना सीखा था । उसके भारतीय रक्त में उबाल आए बिना न रह सका ।

सरजूदास ने देखा कि मुझे किसी बात की कमी नहीं है । मनमाना खर्च करने को धन मिलता है तो क्या, पर उसके उद्गम का स्रोत तो यही भारतीय जनता है ।

हमारे ही देश में ये विदेशी अंग्रेज आज हमें अपमानित कर रहे हैं । नागपुर के मराठा साम्राज्य के रनिवास के हीरे-जवाहरात इन्होंने कलकत्ते के बाजार में कौड़ियों के मोल बेच दिए । गढ़ मंडला के राजा व उसके पुत्र को इन्होंने तोपों के मुँह पर बाँधकर उड़वा दिया । क्रांतिकारियों के शव यत्र-तत्र मरे चिमगादड़ की तरह वृक्षों पर टाँगने वाले ये विदेशी एक दिन यहाँ आश्रय माँगने ही तो आए थे । हमारे व्यक्तिगत सुख की चाह और स्वार्थ ने इस स्वर्ण भूमि को श्मशान बना दिया । ऐसी अकर्मण्यता को धिक्कार है । इस राज्य से तो गरीबी भली ।

सत्रह वर्ष के इस किशोर ने आवेश में आकर खड्ग थाम ली । मैं इनका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खाँ के विरुद्ध मसऊद खाँ के साथ लड़ाई में भाग लेकर मुगल सेना को परास्त कर दिया ।

वे संभाजी को पकड़ना चाहते थे पर वह दिलेर खाँ के साथ पहले ही लड़ाई का मैदान छोड़कर भाग खड़ा हुआ । भारतीय लड़ाइयों में यवन शासकों की अधिकांश पराजय का कारण उनकी चरित्र हीनता ही रही है जिसके कारण साहस और बल की दृष्टि से वे सदैव खोखले ही रहे और इस तरह प्रायः प्रत्येक युद्ध हारते रहे ।

हार का बदला क्रूरता-यह उनका दूसरा सिद्धांत था । दिलेर खाँ जो कभी संभाजी का बड़ा मित्र बनता था, संभाजी की सहायक मराठी सेना को नष्ट हुआ देखकर छल कर बैठा । मार्ग में तिकोटा पड़ता था । यह स्थान मराठी सल्तनत का भाग थी और संभाजी यहाँ के बच्चे-बच्चे से परिचित थे । इन सबके बावजूद दिलेर खाँ ने नृशंसता की और मुगल सैनिकों ने तिकोटा को खूब जी भर कर लूटा ।

संध्या हुई । संभा विचारमग्न लेटे हुए थे तभी पास के कोने से कराहने की आवाज आई । स्वयं उठकर देखने की हिम्मत नहीं थी तभी क्रूर हँसी के साथ दिलेर खाँ प्रविष्ट हुआ और संभाजी को उस खेमे में पकड़ ले गया जहाँ सैकड़ों भारतीय ललनाओं को बंदी बनाकर उनके साथ अमानुषिक अत्याचार किया जा रहा था । संभाजी अपनी ही बहनों पर अत्याचार होते देखकर सिहर उठे, हृदय चीत्कार कर उठा । पर एक राष्ट्रघाती शर्म से सिर झुका लेने के अतिरिक्त कर भी क्या सकता था ।

प्रायश्चित उनकी धर्म पत्नी येसुबाई ने सुझाया । उसी रात संभाजी मुगलों के चंगुल से भाग निकले । पिता ने इन्हें क्षमा भी कर दिया पर जो भूल हो चुकी थी, जिसके कारण उन्होंने अपनी आँखों से अपनी संस्कृति को अपमानित होते देखा था उसके पश्चाताप की आग में वे मृत्यु पर्यंत झुलसते रहे ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाति द्रोह का प्रतिफल

वीर शिवाजी और औरंगजेब के मध्य बीजापुर के शासक मसऊद खाँ के विरुद्ध सम्मिलित युद्ध अभियान की संधि हो गई । संधि की शर्तों के अनुसार शिवाजी को अपने पुत्र संभाजी को मुगल दरबार में रेहन रखना पड़ा । मराठे औरंगजेब की कूटनीति जानते थे । अतएव वे मुगल-मराठा संधि के पक्ष में नहीं थे । संभाजी का मुगल दरबार में बंधक रखना तो और भी अपमानपूर्ण लगा किन्तु शिवाजी को मराठों की वीरता पर विश्वास था इसलिए संधि शर्तों के पालन में कोई दिक्कत न आई । मुगल सल्तनत में प्रवेश के साथ ही संभाजी की पहली दृष्टि पड़ी सुरा और सुंदरियों पर । कर्म के दूरवर्ती परिणामों पर विवेकजन्य विचार न करने वालों, इन्द्रियों के आकर्षणों पर अंकुश न रख सकने वालों के समान ही संभाजी का भी इस तरह पतन प्रारंभ हुआ और उसका अंत अपने पिता के प्रति विद्रोह के रूप में आ प्रस्तुत हुआ ।

संभाजी को मालूम था कि दुश्चरित्रता भारतीयों में सबसे बड़ा अपराध होती है । शासक और मार्गदर्शक के लिए तो वह अक्षम्य भी होती है । एक बार स्थिति बिगड़ जाने पर सत्ता का उत्तराधिकार प्राप्त करना भी अनिश्चित था । अतएव संभा पूरी तरह पाप पंक में डूब गए । वासना के कुचक्र में ही नहीं फँसे वरन् उन्होंने राष्ट्र घात भी किया । औरंगजेब को पिता की सेना, दुर्ग, कोष के ठिकानों का सारा अता-पता दे दिया । भारतीय इतिहासज्ञों का कथन है कि यह सब औरंगजेब के संकेतों पर हुआ किन्तु दोष संभाजी को ही दिया जाना चाहिए जो बुद्धिमान होकर भी विवेक स्थिर न रख सके । यह जानते हुए भी कि वासना और राष्ट्रघात दोनों पतन के घर हैं-अपने आपको वे नियंत्रित न कर सके ।

औरंगजेब ने निश्चय किया कि अब बीजापुर विजय का श्रेय अकेले ही लूटना चाहिए । सो उसने संभाजी को लालच देकर लड़ने के लिए राजी कर लिया । शिवाजी के साथ हुई शर्त उसने ठुकरा दी और अपने क्रूर सेनापति दिलेर खाँ के साथ संभाजी को बीजापुर युद्ध में भेज दिया । शिवाजी मर्माहत हो उठे । बदला लेने के लिए उन्होंने बीजापुर नरेश का साथ दिया और अपने पुत्र व दिलेर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वे अपने पुत्र शिवाजी से अधिक स्नेह देती रहीं थीं । तानाजी के मन में भी माता जीजा बाई के प्रति सगे पुत्र जैसी ही श्रद्धा थी । बड़ा सुदृढ़ था यह भावनात्मक संबंध रक्त संबंधों से भी दृढ़तर ।

जीजा बाई का पत्रवाहक तानाजी के पास पहुँचा । तानाजी ने पत्र पढ़ा । पत्र क्या था, मातृभूमि और माता जीजा बाई दोनों ने उनके प्राणों की दक्षिणा माँगी थी । जिस दिन जीजा बाई के पास पहुँचना था उसी दिन, माघ बदी ९ के दिन उनके पुत्र रायबा का विवाह था । विवाह की तैयारियाँ हो रही थीं । मंगलगीतों से आकाश गूँज रहा था । बंदनवारें सजाई जा रही थीं । तोरण द्वार बन रहे थे । छत्रपति शिवाजी के बाल्य बंधु के पुत्र का ब्याह जो था ।

तानाजी के लिए यह विकट परीक्षा की घड़ी थी । एक ओर पुत्र के विवाह का मोह था तो दूसरी ओर कर्तव्य की पुकार माता जीजा बाई के पत्र के रूप में आकर बुला रही थी । किन्तु वीरवर ताना जी को निर्णय करने में अधिक समय नहीं लगा । उन्होंने पारिवारिक मोह से कहीं ऊँचा स्थान देशप्रेम को दिया ।

तानाजी ने विवाह का कार्य अपने सहायकों पर छोड़ अपने छोटे भाई सूर्या जी और एक हजार निर्भीक मावले वीरों को साथ ले रासगढ़ होते हुए माता जीजा बाई का चरण स्पर्श किया और कोंकण विजय के लिए निकल पड़े । देश-प्रेम के मतवाले इन वीरों के लिए एक कोंकण का किला फतह करना क्या कठिन था ।

रात के अँधेरे में एक मावला सरदार पालतू गोह के सहारे किले की दीवार पर चढ़ गया । उसने रस्सी बाँधी, उसके सहारे पाँच सौ वीर ऊपर पहुँच गए । तानाजी इनके नेता थे । सूर्या जी पाँच सौ वीरों के साथ द्वार खुलने की प्रतीक्षा में थे । किले के भीतर पहुँचे वीरों ने भीतरी सैनिक सावधान हों उसके पहले ही द्वार खोल दिए । इस प्रकार सूर्या जी और उनके साथी भी भीतर प्रविष्ट हो गए । भयंकर युद्ध हुआ । विजय श्री उन्हीं वीरों के हाथ रही । किन्तु तानाजी इस मुहिम में काम आये । विकट दुर्ग कोंकण और उसमें रह रही अपने साथियों से दुगुनी सेना पर भी तानाजी ने विजय पायी । शिवाजी ने जब तानाजी के बलिदान का समाचार सुना तो वे बोल पड़े-"गढ़ तो आया पर सिंह चला गया । यह किला तुम्हें समर्पित । आज से इसका नाम सिंहगढ़ होगा ।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"अब तो उधर से तोप का इस्तेमाल किया जाने लगा है"-अजीज ने अपने पिता सिद्धी जौहार से कहा और सिद्धी बोला-"चलो वापस चलते हैं । ओहदा जान से ज्यादा प्यारा नहीं है ।"

और वे लोग अपना सा मुँह लेकर लौट गए ।

मोह विजय

पुरंदर की संधि के अनुसार औरंगजेब ने छत्रपति शिवाजी को स्वतंत्र राजा स्वीकार कर लिया था पर वह राज्यलिप्सु अधिक दिनों तक इस संधि पर आरूढ़ न रह सका । उसने अपने दक्षिण के सूबेदारों को पुनः युद्ध जारी करने का आदेश दिया । शिवाजी भी उस आक्रमण का सामना करने के लिए सन्नद्ध थे । गुरु रामदास ने उनसे यही दक्षिणा माँगी थी-'कोंकण के किले पर भगवा ध्वज लहराओ ।' सदियों बाद किसी गृह त्यागी संन्यासी ने अपनी स्वर्ग-मुक्ति की संकीर्ण कामना से ऊपर उठकर राष्ट्रीय भावना के नव जागरण का उद्योग किया था ।

शिवाजी ने समर्थ रामदास की आज्ञा को सिर झुका कर स्वीकार किया । औरंगेजब ने हिन्दू राजाओं की आपसी फूट और अहमन्यता से भरपूर लाभ उठाया था । उसने कोंकण के किले पर उनका मुकाबला करने के लिए राजपूत सामंत उदयभानु को नियुक्त किया । किले का रक्षक कोई भी हो, गुरुदेव को दिया वचन तो पूरा करना ही है । उन्होंने अपने सरदारों की ओर देखा-कौन आगे आता है कोंकण के किले पर फतह पाने । कोंकण के किले की विकट स्थिति को स्मरण कर कोई आगे नहीं आया । इस संदिग्ध विकट विजय यात्रा के लिए किसी सरदार को आगे आता न देख राजमाता जीजा बाई बोलीं-"यदि कोई वीर इस गुरुतर दायित्व को निभाने के लिए आगे नहीं आता तो कोई बात नहीं, मेरा पुत्र मेरी बात नहीं टालेगा ।"

जीजा बाई का संकेत शिवाजी के बाल्य बंधु तानाजी मालसरे की ओर था । माता जीजा बाई ने तानाजी को अपनी कोख से जन्म भले ही न दिया हो पर तानाजी के भावात्मक निर्माण में उनकी भूमिका माता की ही रही थी । तानाजी को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गोली उनको भी आकर लगी । पर उन्होंने बजाय चीखने या कराहने के जोर से कहा-"हर हर महादेव ! जय भवानी माता की !"

"बहादुरों ! हिम्मत से काम लो । जीतोगे तो जियोगे, मरोगे तो पूजे जाओगे । साहस को मत जाने देना ।"

अपने सरदार के शौर्यपूर्ण आह्वान से उत्साहित होकर मावले वीर द्विगुणित उत्साह से लड़ने लगे । अपने आपको बचा कर शत्रु सेना पर वार करने के लिए वे बड़ी सूझ-बूझ और चातुरी से काम ले रहे थे । परंतु इस संघर्ष में वे भी तो अक्षत नहीं रह सकते थे । मावले वीर मरने लगे, कई घायल भी होते जा रहे थे ।

पर घायल सैनिकों का मनोबल भी बहुत ऊँचा था । स्वयं बाजी प्रभु को २६ घाव लगे थे । कभी गोली रगड़ खाकर निकल जाती तो कभी पिंडलियों को छीलती हुई चली जाती । इस प्रकार उनके शरीर में २६ बार गोलियों की रगड़ लगी और कुछ अंगों में छर्रे भी घुस गए ।

इसके बाद जो गोली बाजी प्रभु को लगी वह उनके लिए मौत का संदेशा लायी थी । वे जमीन पर गिर पड़े किन्तु उनकी ललकार नहीं रुकी । वे अपने सैनिकों को बार-बार प्रोत्साहित करते हुए लड़ने-जूझने, मरने-मारने के लिए प्रोत्साहित करते जा रहे थे । शायद वे प्राण भी छोड़ देते परंतु उनके कान तो विशालगढ़ से तोप की आवाज सुनने के लिए आतुर प्रतीक्षा कर रहे थे और यह प्रतीक्षा पूरी होने तक वे मृत्यु को भी इंच भर दूर रहकर प्रतीक्षा करने के लिए बाध्य किए दे रहे थे । सिर चकरा रहा था, गला सूख रहा था, घावों से निरंतर हो रहे रक्त प्रवाह के कारण प्राण पानी के लिए तरस रहे थे पर कंठ से आवाज निकलने में कोई कमी नहीं आयी । वे बराबर अपने सैनिकों का हौसला बढ़ाते रहे ।

इधर विशालगढ़ से तोप के दागे जाने की आवाज सुनी उधर बाजी प्रभु ने द्वार पर खड़े प्रतीक्षा कर रहे मृत्यु अतिथि का स्वागत किया । २७ घावों से निरंतर बहते हुए रक्त के कारण उनका शरीर सफेद हो गया था पर उनके चेहरे पर एक मुस्कान खिली हुई थी । यह मुस्कान अपने कर्तव्य को वीरता के साथ पूरा करने के संतोष से निःसृत हुई थी ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसके सिवा कोई दूसरा मार्ग भी नहीं था । उन्होंने अश्रुपूर्ण नेत्रों से बाजी प्रभु को देखते हुए उन्हें गले से लगा लिया और आगे बढ़ गए । शिवाजी के जाते ही बाजी प्रभु ने तुरंत अपने चार-पाँच सौ सैनिकों को लेकर मोर्चा बना लिया । पहाड़ी मार्ग इतना सँकरा था कि उस पर दो-तीन आदमियों से अधिक व्यक्ति एक साथ नहीं चल सकते थे । इस मार्ग को भी बाजी प्रभु ने मावला वीरों को निर्देश देकर पत्थरों और शिलाखंडों से पाट दिया तथा पाढर पानी नाले के पास छुपकर शत्रु सेनाओं की प्रतीक्षा करने लगे । कुछ ही समय में शत्रु सेनाएँ घाट तक पहुँच गयीं ।

कहाँ तो चार-पाँच सौ मालवा सैनिक और कहाँ २०-२२ हजार की बीजापुरी कुमुक । लेकिन मावले सैनिकों का मनोबल आकाश को चूम रहा था । उनमें राष्ट्र, धर्म और संस्कृति के लिए लड़ने-मरने का जोश उफान खा रहा था । इसलिए शत्रुओं को संख्या बल में अधिक देखकर भी वे न घबराये न किंकर्तव्यविमूढ़ ही हुए । थोड़े ही समय में बाजी प्रभु के रणनीतिज्ञ मस्तिष्क ने ऐसी व्यूह रचना कर ली थी कि बीजापुरी जवानों का आगे बढ़ पाना टेढ़ी खीर हो गया । जब वे घाट चढ़ने लगते तो बाजी प्रभु के सैनिक उन पर ऊपर से पत्थर और शिलाखंड लुढ़का देते । पहाड़ी मार्ग ऐसा था कि आगे का व्यक्ति पीछे नहीं दिखाई देता था और पीछे वाले को आगे का पता नहीं चलता था । बीजापुरी सिपाही कुछ देर तक तो इसी प्रकार मृत्युपाश में बँधकर निष्पंद पड़ते गए किन्तु शीघ्र ही अजीज को इसका पता चल गया ।

अजीज ने सैनिकों को रुकने के लिए कहा । कुछ देर बाद उसने अपने जवानों को नीचे से ही बंदूक का प्रयोग करने के लिए कहा । लेकिन बंदूक का निशाना बनाएँ तो किसे । सब मावले तो पत्थरों की ओट में छिपे हुए थे । अजीज ने कुछ इस तरह जाहिर करना शुरू किया जैसे उसके सैनिक आगे बढ़ रहे हैं । इस भ्रम में आकर मावले ऊपर से पत्थर लुढ़का देते । सामने का पत्थर लुढ़का देने के कारण वे दिखाई दे जाते थे और उसी समय बीजापुरी सैनिक उन्हें अपनी गोली का शिकार बना लेते ।

अभी तक तो एक भी मावला वीर नहीं मारा गया था ? अब क्या बात हो गयी है यह जानने के लिए बाजी प्रभु ने ऊपर उठकर जैसे ही देखा वैसे ही एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जब वह शिवाजी के साथ बीजापुर नगर में प्रवेश करेगा । जब बीजापुर का सुल्तान, सरदार और प्रजा उसको शिवाजी के साथ देखेगें तो उसका सम्मान कितना बढ़ जायगा । कोई आश्चर्य नहीं कि इस सफलता के कारण सुल्तान उसका पद व ओहदा भी बढ़ा दें ।

साथ ही उसके कानों में गूँज उठे सुल्तान के यह शब्द "शिवा को जिंदा या मुर्दा दरबार में हाजिर करो । क्या मेरी सल्तनत में ऐसा कोई जवाँ बहादुर नहीं रह गया जो शिवा जैसे धूर्त और मक्कार काफिर को पकड़ सके ।"

उस समय सुल्तान के चेहरे से कैसी बेताबी टपक रही थी । सिद्धी जौहार की आँखों में सफलता के फलस्वरूप होने वाली भावी उन्नति, शाही सम्मान और बढ़े हुए रुतबे के मधुर स्वप्न नाचने लगे । शिवाजी के जाते ही वह उस तंबू में चला गया जहाँ नाचरंग हो रहे थे और जाम से जाम टकरा रहे थे । आज की महफिल का रंग कुछ और ही था । सिद्धी ने कामयाबी की खुशी में भर भर प्याले पिए और नर्तकियों की मादक चितवन और मोहक मुद्राओं को रस भीनी निगाहों से देखता रहा ।

महफिल तब तक जमी रही जब तक सिद्धी और फाजल नशे में पूरी तरह डूब नहीं गए । उनके सो जाने के बाद शिविर में सन्नाटा छा गया । देर तक सन्नाटा छाया रहा और सन्नाटा जब टूटा तो सिद्धी के पाँव तले की जमीन ही खिसक गयी थी । कारण था कि शिवाजी अपनी सैनिक टुकड़ी के साथ दुर्ग से भाग निकले थे । यह खबर सुनते ही सिद्धी ने अपने पुत्र अजीज और फाजल खाँ को तुरंत शिवाजी का पीछा करने का हुक्म दिया ।

इधर शिवाजी ने दुर्ग से निकलने के बाद विशालगढ़ का रास्ता पकड़ा था । वे रात भर चलते रहे । सुबह तक चलते रहने पर जब विशालगढ़ कुछ ही मील दूर रह गया था कि नीचे घाटी में सिद्धी की सेनायें आती दिखाई दीं । उन्हें चिंतातुर देखकर बाजी प्रभु देशपांडे ने कहा-"मैं घाटी के नीचे ही शत्रुओं को रोक रखता हूँ । आप सीधे विशालगढ़ पहुँचिए और पहुँचने के बाद तोप चलवाइये ताकि मैं समझ सकूँ कि आप गढ़ में पहुँच गए हैं । मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि गढ़ में पहुँचने तक बीजापुरी सेना को एक कदम भी आगे नहीं बढ़ने दूँगा ।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रस्ताव लेकर एक दूत भेजा गया जिसमें शिवाजी द्वारा स्वयं संधि के लिए आने की बात भी शामिल थी ।

सिद्धी जौहार को और क्या चाहिए था ? वह तो चाहता ही था कि किसी प्रकार शिवाजी पर हाथ डालने का मौका भर मिल जाये । फिर तो वह उन्हें गिरफ्तार कर सुल्तान के सामने हाजिर करने तक जरा भी गफलत नहीं करेगा । वह इसके लिए तुरंत तैयार हो गया और नियत समय पर शिवाजी अपने सैनिकों के साथ सिद्धी के डेरे में पहुँचे ।

सिद्धी जैसे पहले ही इसकी प्रतीक्षा कर रहा था । जब विश्वास हो जाय कि पंछी खुद जाल में आ रहा है तो शिकारी का मन आह्लाद से क्यों नहीं भर उठेगा । सिद्धी जौहार और शिवाजी दोनों आपस में बड़ा प्रेम प्रदर्शन करते हुए मिले परंतु वस्तुतः प्रेम किसी के हृदय में नहीं था । शिवाजी एकदम सतर्क और सजग होकर सिद्धी की हरकतों को देख रहे थे । कहीं अफजल खाँ जैसा धोखा न हो, इसलिए उन्होंने अपने वस्त्रों के नीचे लौह कवच पहन रखा था और कपड़ों में ही बघनखा भी छिपा रखा था ताकि किसी भी प्रकार की चालाकी होते देखकर वे भी अपना वार कर सकें । इधर सिद्धी भी आतंकित और सशंकित सा था ।

दोनों बहुत देर तक बातें करते रहे । शिवाजी ने अपनी व्यवहार कुशलता और वाक्चातुर्य से सिद्धी जौहार को प्रभावित कर लिया । प्रभावित ही नहीं सिद्धी के मन में यह बात भी बैठा दी कि वे संधि की सभी शर्तों को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं । शिवाजी ने अपनी बातों से सिद्धी का मन मोह लिया । उसकी प्रशंसा के पुल बाँध कर उसे आसमान पर चढ़ा दिया ।

और सिद्धी इस सफलता से फूला नहीं समा रहा था । शिवाजी ने सिद्धी के साथ बीजापुर चलना स्वीकार कर लिया और सिद्धी को बेतरह प्रभावित हुआ देखकर कहा-"रात बहुत बीत गयी है । आप भी थक गए होंगे । अतः कल प्रातःकाल संधि की शर्तें तय करेंगे ।"

सिद्धी को इसमें क्या आपत्ति हो सकती थी । वह घर बैठे, बिना युद्ध किए इस सिंह को कैद कर बीजापुर के सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत करने की प्रसन्नता से सराबोर हुआ जा रहा था । उसकी आँखों के सामने वह अनागत दृश्य कौंध उठा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चेहरे पर खिली मुस्कान

बीजापुर की सेनाओं ने पन्हाला दुर्ग पर घेरा डाल रखा था । किले में कैद से हो गए थे छत्रपति शिवाजी जिन्होंने भारत में एक भारतीय राष्ट्र की स्थापना का वज्र संकल्प लिया था और उस संकल्प को पूरा करने में जी जान से जुटे हुए थे । बीजापुर के सुल्तान को इस बात में कोई रुचि नहीं थी कि दुर्ग पर किसका अधिकार हो ? वह तो शिवाजी को अपने सामने एक बंदी के रूप में देखना चाहता था जिन्होंने उसके चुने हुए योद्धाओं को चुटकियों में खेत करके रख दिया था और इसका बदला वह शिवाजी को अपने सामने तड़पते हुए मरते देखकर लेना चाहता था तथा इसके लिए उसने अपनी सेना के शूरवीर सरदार सिद्धी जौहार तथा अफजल खाँ के लड़के फाजल खाँ को भेजा था ।

सिद्धी जौहार चौदह हजार पैदल सेना और दस हजार सवारों को लेकर पन्हाला दुर्ग पर पहरा डाले हुआ था और पन्हाला दुर्ग में घिरे हुए छत्रपति शिवाजी शत्रु सेनाओं की ताजीतर सूचनाओं से अवगत होते हुए अपनी रणनीति बनाते जा रहे थे । उस दिन उन्हें सूचना मिली कि दुर्ग में खाद्य सामग्री कम होने लगी है । भूखे सैनिकों का उत्साह कभी भी टूट सकता है । यह सोचकर उन्होंने अपने सरदारों को इकट्ठा कर कहा-"हमें अब सिद्धी से संधि कर लेनी चाहिए । उसके पास दूत भेजो और कहलवा दो कि संधि की वार्ता के लिए मैं स्वयं उसके पास जाऊँगा । बड़े ही चतुर आदमी को भेजना और किसी भी तरह सायंकाल का समय वार्ता के लिए निश्चित करना ।"

छत्रपति स्वयं जायेंगे ?

कई सरदार हतप्रभ देखते रह गए ।

कुछ ने कहा-"महाराज को जान-बूझकर शेर की मांद में नहीं जाना चाहिए और फिर यह तो वर्षाकाल है । इस ऋतु में कोई कब तक घेरा डाले टिका रह सकता है ।"

"ठीक कहते हो । मैं भी इस बात को जानता हूँ पर इसके अलावा कोई उपाय नहीं है"-और फिर शिवाजी ने जो योजना उन सरदारों के सामने रखी उसकी सफलता के संबंध में सभी आश्वस्त हो गए । सिद्धी जौहार के पास संधि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

था ? एक युवक सैनिक तपाक से आगे बढ़ा, "शीघ्रता कीजिए, अन्यथा मुगल सैनिकों के घेरे से निकलना कठिन हो जाएगा" और यह कहते कहते वह अग्नि जलती खाई में लेट गया। शिवाजी सहित सारे सैनिक उस पर पैर रख कर उस पार निकल गए। आगे बढ़ते हुए शिवाजी ने फिर एक बार पीछे मुड़कर देखा। धू-धू कर हरिहर का शरीर जल रहा था। एक क्षण के लिए उनके मस्तिष्क में उस रात वाली घटना बिजली की तरह कौंध गई, पर रुकना और सोचना जान-बूझ कर मृत्यु का आह्वान करना था।

जान हथेली पर रखकर यह काफिला आगे बढ़ता जा रहा था और अश्वारोही मुगल सैनिक पीछा कर रहे थे। गाँव के बीच से सैनिकों की यह भगदड़ देख कर वहाँ के निवासी भी भयभीत हो गए। किंकर्तव्यविमूढ़ जहाँ तहाँ लोग खड़े थे। एक भागती हुई प्रौढ़ा के कान में स्वर पड़ा-"क्या कुछ सैनिक भागते हुए इधर से निकले हैं ?"

पीछे की ओर मुड़कर बिना रुके उसने उत्तर दिया-"नहीं"।

"जानते हुए भी झूठ बोलने का यह प्रयास।" इतना कहकर एक सैनिक ने घर तक उसका पीछा किया। वह अंदर प्रवेश करने ही वाला था कि उस प्रौढ़ा ने नीचे पढ़ा गंडासा हाथ में लेकर गरजते हुए कहा-"खबरदार ! यदि पैर आगे बढ़ाया तो उसका दुष्परिणाम भुगतना होगा।"

तब तक तीन-चार सैनिक और आ चुके थे। म्यान में से तलवारें खींच ली गईं। प्रौढ़ा के रक्त ने एक तलवार की प्यास बुझाई। धड़ से उसका सिर अलग हो गया। उसके मुँह से केवल 'हरिहर' निकला और आँखें बंद हो गईं। यह हरिहर की माँ थी जिसने अपना कर्तव्य पूर्ण कर दिखाया।

मुगल सैनिक अपनी जीत पर खुश हो रहे थे। पर वस्तुतः यह उनकी पराजय थी। कुछ मिनटों के इस व्यवधान ने शिवाजी की सैन्य टुकड़ी को मुगलों के कराल पंजों से दूर, बहुत दूर निकाल दिया था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"हरिहर ! समरभूमि में तुम्हारी सेवाओं की अभी आवश्यकता नहीं है । राष्ट्र के संकट के समय प्रत्येक नागरिक युद्ध के लिए मोर्चे पर नहीं जाता, कुछ व्यक्तियों को अपने परिवार तथा गाँव की रक्षा के लिए भी रुकना पड़ता है । तुम यहीं रहो, अपनी दुखिया माँ के आँसू पोंछना और दादी की इस वृद्धावस्था में सेवा करना । निराश होने की आवश्यकता नहीं । एक दिन तुम्हें यहीं अपना शौर्य प्रकट करने का अवसर प्राप्त होगा ।"

हरिहर की मातृभूमि के प्रति बलिदान होने की उत्कट इच्छा शिवाजी के समझाने से शांत होने वाली न थी । उसके रक्त की उष्णता कुछ कर दिखाने के लिए आतुर हो रही थी । दादी और माता दोनों ने उस खिलते पुष्प को शिवा के चरणों में चढ़ा दिया । शिवाजी ने भी चमचमाता रत्न जटित हार अपने कंठ से उतार कर वृद्धा के चरणों में रख दिया और अश्रु पूरित नेत्रों से विदा ली ।

**** **** **** ****

दुर्ग चारों ओर से मुगल सैनिकों द्वारा घेर लिया गया था । उसके अंदर शिवाजी सहित पचास सैनिक ही रह गए थे । इतने कम सैनिक बाहर घेरा डाले सैकड़ों मुगल सैनिकों से टक्कर कैसे ले सकते थे ? यह गनीमत थी कि दुर्ग पर राष्ट्रध्वज अभी भी फहरा रहा था ।

शिवाजी किले से सुरक्षित निकलने की युक्ति पर विचार करने लगे । तभी किसी गुप्तचर ने आकर संदेश दिया कि दुर्ग के उत्तरी-पूर्वी कोने पर धधकती हुई अग्नि की खाईं के उस पार शत्रु सेना के केवल दो ही सैनिक पहरे पर हैं ।

संकेत पर सारे सैनिक शिवाजी के साथ बाहर निकल पड़े, बताई गई दिशा की ओर । झाड़ियों के किनारे खड़े दो सैनिकों पर अचानक तीरों की वर्षा हुई और वे वहीं धराशायी हो गए । अब रास्ता साफ था । पर प्रज्ज्वलित अग्नि आगंतुकों को अपने में समेटने के लिए अलग बाधा बन खड़ी थी । आसमान से गिरकर खजूर में अटकने जैसी स्थिति बन चुकी थी ।

खाई के किनारे खड़े शिवाजी इस प्रतीक्षा में थे कि अग्नि कुछ शांत हो जाये तब निकलने की कोशिश की जाए । इससे पहले निकलना तो जान-बूझ कर सैनिकों सहित आत्मदाह करना था । पर प्रतीक्षा के लिए समय भी कहाँ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वतंत्रता का रक्षक तरुण तपस्वी शिवा खड़ा था । आगे बढ़कर उसने वृद्धा के चरणों में अपना माथा झुका दिया । उसका दाँया हाथ आशीर्वाद के लिए उठा और नेत्रों से अश्रुकण ढुलक गए । इन अश्रुकणों में माँ की ममता और सात्विक प्रेम की पावनता झलक रही थी ।

तब तक एक युवती हाथ में दीपक लेकर आई । कोने के एक ताख में दीपक उसने रख दिया और सटकर पीछे खड़ी हो गई । वृद्धा ने अपनी जर्जरित साड़ी के आँचल से अश्रु बिंदुओं को पोंछते हुए रुँधे कंठ से कहा-"मेरा बेटा त्रिहरि, जो तम्हारे संकेत पर मातृभूमि के काम आ चुका है, उसकी विधवा बहू है यह ।"

युवती को समझते देर न लगी कि यह युग पुरुष शिवाजी हैं । उसने मन ही मन उनको प्रणाम किया और अपने भाग्य को सराहने लगी ।

शिवाजी अपने प्रत्येक परिचित व्यक्ति की चिंता रखते थे । एक क्षण को सोचने लगे-'त्रिहरि की मृत्यु के बाद इन निरीह प्राणियों की गुजर कैसे होती होगी ? बड़ी दयनीय स्थिति है इस परिवार की ।' तभी एक १८ वर्षीय तरुण के प्रवेश ने शिवाजी का ध्यान भंग किया । सुगठित शरीर, तेजस्वी चेहरा और सैनिकों जैसी वेशभूषा उस तरुण को स्वयं बता रहे थे कि मैं ही शिवा हूँ जिसकी प्रतीक्षा में तुम घंटों से नरहरे की चौपाल पर बैठे थे ।

उस युवक ने झुक कर चरणरज ली और एक किनारे पर खड़ा हो गया । "अब यही बचा है हम दोनों के जीवन का आधार-त्रिहरि का एकमात्र पुत्र हरिहर । जब तुम्हारी सेवा में वह गया था तब इसकी आयु ६ वर्ष की ही थी । इसे तो अपने वीर पिता का अच्छी तरह स्मरण भी नहीं है । मैं ही जब कभी उसकी कहानियाँ सुना दिया करती हूँ । और अब यह भी अपने पिता की तरह तुम्हारे चरणों में अपना सर्वस्व समर्पित करना चाहता है ।"-वृद्धा ने सारी वस्तुस्थिति स्पष्ट कर दी ।

"महाराज ! आप मेरी वीरता पर विश्वास कीजिए । सिंह के बेटे सिंह ही हुआ करते हैं, गीदड़ नहीं । मैं देश-धर्म की रक्षा के लिए आपके साथ चलूँगा । मुझे अपने प्राणों का तनिक भी मोह नहीं है"-हरिहर ने साथ चलने का आग्रह करते हुए कहा ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मुगल सेनापति की बेगम को शिवाजी ने उदारतापूर्वक लौटा दिया । इससे वह स्त्री और मुगल सेनाधिकारी बहुत प्रभावित हुए । सरदार ने दिल्ली लौटने से पूर्व शिवाजी के दर्शन करने की इच्छा प्रकट की । विशेष दूत द्वारा यह समाचार भेजा गया । शिवाजी ने भेंट करना स्वीकार कर लिया और निःशस्त्र आने की बात तय हुई । बहलोल खाँ जब शिवाजी से मिलने आया तो उनके तेजोद्दीप्त मुख मंडल के आगे उसे स्वयं का अस्तित्व झींगुर के समान लगा । उसके मुँह से अनायास ही यह संबोधन निकला-'फरिश्ता'

हजारों निरपराध प्राणियों के रक्तपात और स्त्रियों के सतीत्व लूटने के अनाचारों को स्मरण कर उसका हृदय ग्लानि से भर आया । शिवाजी से उसने अपनी मनोव्यथा कही ।

शिवाजी ने पश्चाताप से पवित्र हुए हृदय को सांत्वना दी और बहलोल खाँ को गले से लगा लिया । बहलोल ने इसके बाद मुगल-शासन की सेवा छोड़ दी ।

प्राण नहीं, आदर्श बड़ा है

बड़ी भयावह अँधेरी रात । और ऐसी ही रात में वीर मराठे एक गाँव में ठहरे हुए थे । गाँव का जागीरदार-यशवंत राव नरहरे शिवाजी का विश्वसनीय सेवक था । फिर भी लोगों को पता चल गया कि गाँव में वीर शिवाजी का शुभागमन हुआ है । राष्ट्र भक्त के दर्शनों के लिए अपने को कोई भी न रोक सका । नदी में अपार जलराशि की भाँति जन समूह भी दौड़ पड़ा उनके दर्शनों को ।

नरहरे के द्वार पर गाँव वालों का जमघट लग गया, पर शिवाजी का कहीं पता नहीं था । तभी एक टूटी झोंपड़ी के द्वार पर स्वर सुनाई दिया-"माई !" अर्द्धरात्रि की गहन निद्रा में वह धीमा स्वर किसी ने सुन ही नहीं पाया ।

फिर वही स्वर । उत्तर में अंदर से किसी ने पूछा-"कौन ?"

"शिवा"

एक वृद्धा आँखे मलती हुई दौड़ी आई । दरवाजा खोला । सामने भारत की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संध्या समय शिवाजी अपने युद्ध शिविर में बैठे हुए थे । सैनिक और सेनानायक लूट में अर्जित किया गया धन और स्वर्ण मुद्राएँ ला लाकर शिवाजी के सामने ढेर लगाने लगे । आततायी मुगलों ने जो सम्पत्ति हिन्दू राजाओं और धनपतियों से लूट कर अर्जित की थी उसे वापस छीनना अनुचित नहीं था । विषधर सर्प को ठीक करने का इससे अच्छा और सम्भव तरीका दूसरा नहीं हो सकता ।

शिवाजी लूट में लाई गयी धन-दौलत का निरीक्षण कर रहे थे । इसी दौरान एक सेनानायक ने तंबू में प्रवेश किया । उसके पीछे सिर से पैर तक बुर्के से लदी एक स्त्री थी, भय से थर-थर काँपती हुई ।

उन्होंने स्त्री को देखा और उसे लाने वाले सरदार की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि की । सरदार ने आगे बढ़कर स्त्री का बुर्का उलट दिया । अप्रतिम सुंदरी स्त्री के चेहरे पर भय की रेखाएँ खिंच गयीं । मुगल सरदारों ने अनेकानेक हिन्दू स्त्रियों का शील हरण किया था । अपने ही साथ के लोगों द्वारा यह अनाचार होते देख कर तो उसका हृदय भी एक बारगी सिहर उठता था । परंतु लाचार और परवश स्थिति में क्या किया जा सकता था । अपने सजातीय प्राणी पर होने वाले कुकृत्यों की मर्म वेदना को जब अपने साथ तौलती तो उसके हृदय से कराह निकल जाती । परंतु वह तो निरी कल्पना थी । आज उस कल्पना के साक्षात् होने का भय उसे सूखे पत्ते की तरह थर-थर कँपा रहा था ।

शिवाजी ने स्त्री की ओर बिना देखे ही सरदार से पूछा-"क्या बात है ?"

सरदार ने कहा-"यह मुगल सेनानायक बहलोल खाँ की पत्नी है । इन म्लेच्छों ने असंख्य हिन्दू माताओं का शील हरण किया है । उसका प्रतिशोध चुकाया जा सके इसीलिए मैंने यह काम किया ।"

शिवाजी ने अब पीली पड़ी हुई स्त्री की ओर देखा, फिर बोले-"काश, मैं तुम्हारी कोख से जन्म लेता तो मैं भी इतना ही सुंदर होता । देवी ! तुम डरो मत । शिवा ने पर स्त्री को माता माना है, वह अपनी बहनों पर होने वाले अनाचार का उसी प्रकार प्रतिकार नहीं करेगा ।"

फिर वे सरदार की ओर उन्मुख होकर बोले-"तुम वीरता को अभी तक नहीं समझ सके हो । अभी तक तुमने मुझे भी नहीं पहचाना है ।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विश्वास करने वाले भारतीय जीवन दर्शन ने उन्हें यह शक्ति प्रदान की थी कि वे गौरव-गरिमा के साथ जीना तथा उसी गरिमा के साथ मरना भी जानते थे । कुल ललनाओं ने अपने वीर पतियों के मस्तक पर तिलक किया । उनकी आरती उतारी तथा हँसते-हँसते उन्हें वीरगति पाने हेतु बिदा किया । स्वयं विशाल चिता जलाकर उसमें कूद पड़ीं । यह जौहर इनके लिए विवाह संस्कार जैसा ही हर्षोल्लास का अवसर होता था । राजपूत वीरों ने केसरिया वस्त्र धारण कर लिए और घोडे पर चढ़कर आमने-सामने लड़ मरने को प्रस्तुत हुए ।

जयमल के जाँघ का घाव ऐसा था कि वह घोड़े पर नहीं बैठ सकते थे । सेनापति आगे न रहे यह उन्हें स्वीकार न था । कल्ला राठौड़ नाम के एक बलिष्ठ योद्धा ने उन्हें अपने कंधों पर बिठा लिया । केसरिया बाना पहनकर जब ये मृत्यु-वरण को निकले तो इनके सामने केवल मरना था और सैकड़ों को मारकर मरना था । नगाड़े बज उठे, चारणों ने वीर रस की कविता गाई, वीरों का उत्साह छलक पड़ा । दरवाजा खोलकर किसान जैसे खेत काटता है वैसे मुगल सेना को मुट्ठी भर राजपूत काटने लगे । बिजलियों की तरह तलवार जो चली तो रुंड-मुंड कटकर गिरने लगे । कल्ला राठौड़ का सिर किसी ने पहले दरवाजे पर ही काट लिया । पर शरीर की चिंता प्राणों को और मन को कहाँ थी । बिना सिर के ही वह जयमल को उठाकर लड़ते हुए चार दरवाजे पार कर गया तब कहीं जाकर नीचे गिरा । मुगल सेना गाजर-मूली की तरह कट चुकी थी । आखिरकार अकबर जीता पर उसको यह जीत बहुत मँहगी पड़ी थी । उसके हजारों सैनिक मारे जा चुके थे । कल्ला का स्मारक आज भी उस वीरवर की यशोगाथा गा रहा है ।

पर दारेषु मातृवत्

उन दिनों शिवाजी मुगल छावनियों पर छापामार पद्धति से धावा बोलते थे । ऐसे ही एक समय की बात है । शिवाजी ने एक मुगल छावनी पर धावा बोला । विजय मराठी सेना के वीर जवानों की हुई । प्रतिपक्षी सैनिक घर, स्त्री, परिवार और बच्चों को छोड़कर भाग निकले । मुगल सेनापति बहलोल खाँ भी अपनी जान बचाकर भाग गया ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मशक्ति का अद्‌भुत परिणाम

मेवाड़ सदा मुगल शासकों की आँखों में काँटा बनकर चुभता रहा । जो भी दिल्ली के सिंहासन पर बैठा उसने मेवाड़ विजय करना चाहा । मेवाड़ उनके लिए एक चुनौती बनकर सदा अजेय रहा । यदि उसकी भूमि पर एकाध बार किसी ने कब्जा कर भी लिया तो क्या, पर वे महाराणा को झुका न सके । इसका श्रेय वहाँ के वीरों को है । ऐसा ही एक वीर था कल्ला राठौड़ जिसने मृत्यु के सामने भी झुकना नहीं सीखा था । उससे भी वह लड़ता रहा था ।

अकबर ने अपनी विशाल वाहिनी के साथ चित्तौड़ दुर्ग पर आक्रमण किया । दुर्ग के चारों ओर तोपें लगा दी गईं । बड़ा भयंकर आक्रमण किया । चित्तौड़ दुर्ग भी अपनी सानी का दुनिया में एक ही था । अकबर कितने ही समय तक घेरा डाले रहा पर वह दुर्ग पर अधिकार न कर सका ।

महाराणा उदयसिंह पहले ही दुर्ग का भार जयमल सिसोदिया को सौंपकर निकल गए थे । उन्हें यह आशंका थी कि दुर्ग में बंद हो जाने से हम अधिक समय तक रसद नहीं जुटा पायेंगे और फिर बाहर निकलना ही पड़ेगा ।

जयमल एक दिन रात्रि को हाथ में मशाल लिए किले के टूटे बुर्ज की मरम्मत करवा रहे थे । अकबर के सैनिकों ने पहचान लिया कि यही सेनापति जयमल हैं । अकबर के निशानेबाज बंदूकची ने गोली मारी । वह जयमल की जाँध में लग गई ।

कई महीने से लगातार किले की रक्षा करते-करते कई वीर वीरगति पा चुके थे । सेनापति को भी जाँघ में गोली लग गई । रसद भी समाप्त होने जा रही थी । अब अधिक दिनों तक दुर्ग की रक्षा संभव नहीं थी । फिर भी लोग साहसपूर्वक डटे रहे ।

एक-एक करके दुर्ग के छः दरवाजे तो मुगल सेना ने तोड़ दिए । अब केवल एक द्वार बचा था । जिन वीरों को स्वाधीनता प्राणों से भी प्रिय थी, जिन वीरांगनाओं को अपने शील तथा स्वाभिमान की रक्षा करने के लिए प्राणोत्सर्ग करने के लिए क्षण भर भी हिचकिचाहट नहीं होती थी, उनके लिए जिस प्रकार जीवन प्रिय तथा सुखद था वैसी ही मृत्यु भी प्रिय थी । आत्मा की अमरता में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और उसने अपने हाथों से दोनों हीरे जड़े कड़े उतारे तथा गुरु के समक्ष रख दिए। फिर कहा-"इन्हें स्वीकार कीजिए।"

रघु यह कहकर गर्व से देखने लगा। गुरु ने उसके चेहरे पर आते-जाते भावों को देखा और एक कड़ा अँगुली में पहन लिया। अँगुली में पहनकर उसे चौगिर्द चक्र की भाँति घुमाने लगे। हीरे के कण सूर्य के प्रकाश में चमक उठे और उनसे किरणें बिखरने लगीं।

तभी कड़ा उँगली पर से उछला और चट्टान पर से लुढ़कता हुआ यमुना में गिर गया। रघुनाथ ने समझा कि गुरु के हाथों से वह कड़ा असावधानीवश छूट गया है। तत्क्षण उसके मुँह से 'हाय' निकल गयी और वह दौड़ा हुआ गया तथा नदी में कूदकर कड़ा खोजने लगा।

गुरु पुनः स्वाध्याय में तन्मय हो गए। कड़ा खोजते-खोजते जब कुछ देर हो गयी तो उन्होंने रघु को पुकारा। रघुनाथ ने नदी में से ही कहा-"गुरुजी! कड़ा नहीं मिल रहा है। यह पता नहीं चल रहा है कि वह कहाँ गिरा है। आप इतना बता दें तो मैं वह कड़ा निकाल कर अभी लाता हूँ।"

रघुनाथ की आवाज सुनकर गुरु गोविंद ने दूसरा कड़ा भी उठाया और उसे पहले की तरह उँगली में पहनकर घुमाया तथा उछाल दिया। वह कड़ा भी यमुना में जा गिरा। 'छपाक्' की आवाज हुई और गुरु गोविंद सिंह ने कहा-"पहला वाला कड़ा भी वहीं पर गिरा है।"

अब जैसे रघुनाथ को यथार्थ-बोध हुआ। वह नदी में से निकलकर गुरु के सामने खड़ा हो गया। उसके चेहरे पर आए जिज्ञासा के भावों को देखकर गुरु बोले-"जिस समय तुम रोटियाँ देखकर कड़ा दे रहे थे उस समय तुम्हारे चेहरे पर धन का मद खेल रहा था। जहाँ मद होता है वहाँ सेवा नहीं हो सकती। सेवा कोई धन से नहीं होती। उसके लिए तो हृदय में भाव होने चाहिए।" रघुनाथ का समाधान हो चुका था। उसने अपनी भूल का अनुभव किया और अपने मन का परिष्कार किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धन नहीं भाव बड़ा है

गुरु गोविंद सिंह निविड़ वन में बैठे एकांत चिंतन, ध्यान और स्वाध्याय में लीन थे । नीचे वेगवती यमुना कल-कल करती बह रही थी और ऊपर चट्टान । चारों ओर पर्वतीय उपत्यिकाओं से घिरे उस स्थान पर प्राणी के नाम पर केवल चिड़ियाँ और वन्य पशु थे तथा थे गुरु गोविंद सिंह । चिड़ियों की चहचहाहट और वन्य पशुओं की आवाजें उस प्राकृतिक स्थल को एक मनोहारिता प्रदान कर रही थीं ।

तभी गुरु ने देखा यमुना को पार कर उनका एक शिष्य उनकी ही ओर आ रहा था । निकट आने पर उसे पहचाना, उस शिष्य का नाम था रघुनाथ । काफी सम्पन्न और ऐश्वर्यशाली । उसे अपनी धन-सम्पदा का भी बड़ा अभिमान था । वह निकट आकर गुरु के पास बैठ गया । गुरु ने कहा-"आओ रघु, कैसे आए हो !"

रघुनाथ ने गुरु के चरणों में विनम्र प्रणाम किया और बोला-"सुना था कि आप हम भक्तों को छोड़कर इस एकांत वन में आ गए हैं । सोचा आपकी कुशल क्षेम ही पूछ आऊँ ।"

"मेरी कुशल क्या जानना है रे रघु"-गुरु ने बड़ी आत्मीयता से संबोधित करते हुए कहा-"कुशल तो मेरे उन बंदों की पूछ जाकर जो ग्रंथ साहिब का संदेश तमाम कष्ट-कठिनाइयाँ सहकर भी लोगों तक पहुँचाने में लगे हुए हैं ।"

इतना कहकर गुरु गोविंद ने अपने पास की रूखी रोटियाँ रघुनाथ की ओर करते हुए कहा-"इस निर्जन वन में तो मैं तुम्हारा स्वागत इन्हीं से कर सकता हूँ ।"

रघु ने उन्हें देखा और तुरंत कहा-"अरे गुरुजी ! आप इन सूखे टुकड़ों पर अपना निर्वाह कर रहे हैं ।"

"सूखे टुकड़े नहीं, ये प्रेम के पकवान हैं"-गुरुजी बोले-"इन्हें एक भाई दे गया था ।"

"तो मैं आपकी सेवा में एक तुच्छ भेंट अर्पित करता हूँ"-रघु ने कहा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पूर्वक कहा-"अरे भाई ! तुम ऐसा शुभ समाचार सुनाते वक्त इस प्रकार रो रहे हो । यह तो ठीक नहीं । शुभ समाचार तो हँसते हुए उत्साहपूर्वक सुनाना चाहिए । जल्दी बताओ उन सिंह संतानों ने कहाँ और किस प्रकार धर्म पर अपना बलिदान दे दिया ?"

दूतों ने बतलाया-"गुरुजी ! मुखवाल से बिछुड़ कर माता और दोनों कुमार गंगू रसोइये के साथ उसके घर चले गए । किन्तु गंगू ने माता जी के गहनों के लालच में विश्वासघात करके कुमारों को गिरफ्तार कराकर सरहिंद के नवाब के हवाले कर दिया । सरहिंद के नवाब ने उनसे कहा-"बच्चों, अगर तुम मुसलमान हो जाओ तो तुम्हारी जान बख्श दी जायेगी, शाहजादियों से तुम्हारी शादी करा दी जाएगी और एक बहुत बड़ी जागीर इनाम में दे दी जाएगी ।" किन्तु वे दोनों कुमार न तो मौत से डरे और न लालच में आए । उन्होंने नवाब से साफ-साफ कह दिया कि धर्म की महत्ता एक प्राण क्या करोड़ों प्राणों से भी अधिक है । और धर्म क्या बिकने वाली चीज है जो आप लोभ देकर खरीदना चाहते हैं । आप बेशक हमारे प्राण ले लीजिए लेकिन हम अपना धर्म नहीं छोड़ सकते । इस पर नवाब ने अपने सरदारों को बच्चों को मार डालने का हुक्म दिया । लेकिन वे तैयार न हुए ।

तब नवाब ने उन बच्चों को किले की दीवार में जिंदा चुनवा दिया । लेकिन वे दोनों कुमार अंत तक हँसते और धर्म की जय बोलते रहे । माता ने यह समाचार सुना तो छत से कूदकर प्राण दे दिए ।"

गुरु गोविंद सिंह खुशी से उछल पड़े और बोले-"फतह सिंह और जोरावर सिंह सच्चे वीर थे । हम सबको उनसे शिक्षा लेनी चाहिए । इसी प्रकार निर्भय बलिदान देकर ही धर्म की रक्षा की जाती है । धन्य हो वीरों ! तुमने धर्म की साख बढ़ा दी ।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वे-जिन्होंने मोह को जीत लिया था

गुरु गोविंद सिंह उन दिनों चमकौर के किले में रहकर मुगलों से युद्ध कर रहे थे । मुखवाल से जाते समय उनकी माता और दो छोटे लड़के फतह सिंह और जोरावर सिंह बिछुड़ गए थे । लेकिन गुरु गोविंद सिंह को कार्य-व्यस्तता के कारण उनको खोजने का समय न मिल पाया था । वे अपने बड़े लड़कों अजीत सिंह और जुझार सिंह के साथ चमकौर के किले में रहकर आगे की योजनाएँ बनाने और उन्हें कार्यान्वित करने में व्यस्त थे । तभी एक दिन कुछ दूत उनके पास संदेश लेकर आए । वे मुखवाल और आनंदगढ़ की तरफ से ही आए थे ।

गुरु गोविंद सिंह ने दूतों का स्वागत किया और हँसकर पूछा-"बताओ भाई ! हमें छोड़कर गए सिक्खों और बिछुड़ी हुई माता तथा दोनों छोटे कुमारों का कोई समाचार है । और अगर शत्रुओं का भी कोई समाचार हो तो बतलाओ ।"

दूतों ने कहा-"गुरुजी ! जो सिक्ख मुखवाल से आपका साथ छोड़कर चले गए थे, गाँव पहुँचने पर उनके परिवार वालों तक ने उन्हें धिक्कार कर विश्वासघाती कहा । उनको अपनी गलती अनुभव हुई और अब वे सब आपसे क्षमा माँगने के लिए इधर चल पड़े हैं ।" गुरु गोविंद सिंह ने हर्षपूर्वक कहा-"यह तो बड़ा शुभ समाचार है । सुबह का भूला शाम को घर आ जाये तो भूला नहीं कहा जा सकता । और आगे के समाचार बतलाओ ।"

दूतों ने आगे कहा-"महाराज ! यह जानकर कि आप चमकौर में विराजमान हैं, मुगलों की एक बड़ी भारी सेना चमकौर पर आक्रमण करने आ रही है ।" गुरु गोविंद सिंह ने कहा-"यह तो और भी अच्छा समाचार है । धर्म युद्ध तो तब तक चलता ही रहना चाहिए जब तक अधर्म का नाश न हो जाए । आगे बतलाओ माता और कुमारों का क्या समाचार है ? क्या कुमारों और माता ने शत्रुओं की शरण ले ली अथवा प्राणों के मोह में धर्म मार्ग से विचलित हो गए ?" दूत तत्काल बोल उठा-"महाराज ऐसा न कहें ! कुमारों ने धर्म के नाम पर बलिदान दे दिया है ।" कहकर दूत रोने लगे । गुरु गोविंद सिंह ने उत्सुकता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिए दुनियाँ में सब बराबर हैं और जो सबको अपना प्यारा भाई समझता है"- कहते-कहते नानक के मुख पर एक तेज चमकने लगा । जमींदार ने कुछ देखा और कुछ समझा किन्तु फिर भी कहा-"अगर आप किसी में अंतर नहीं समझते हैं तो मेरे साथ मस्जिद में नमाज पढ़ने चलिए ।" नानक ने जरा भी संकोच नहीं किया और वह एकेश्वरवादी संत उसके साथ मस्जिद चला गया ।

जिस समय गुरु नानक मक्का की यात्रा करने गए थे, यह दूसरी घटना उसी समय की है । निर्द्वंद्व संत दिन भर स्थान-स्थान पर सत्संग करते, मुसलमान धर्म का स्वरूप समझते और अपने धर्म का दर्शन कराते-फिरते रहे और रात में मस्ती के साथ एक मैदान में पड़कर सो रहे । संयोगवश उनके पैर काबा की ओर फैले हुए थे । उधर से कई मुसलमान निकले । वे बड़े ही संकीर्ण विचार वाले थे । उन्होंने गुरु नानक को काबे की तरफ पैर किए लेटा देखा तो आपे से बाहर हो गए । पहले तो उन्होंने उन्हें काफिर आदि कहकर बहुत सी गालियाँ दीं और तब भी जब उनकी नींद न टूटी तो लात-घूँसों से मारने लगे । नानक जागे और नम्रता से बोले-"भाई क्या गलती हो गई जो मुझ परदेशी को आप लोग मार रहे हैं ।"

मुसलमान गाली देते हुए बोले-"तुझे सूझता नहीं कि उधर काबा-खुदा का घर है और तू उधर ही पैर किए लेटा है ।"

नानक ने कहा-"अच्छा तो ऐसा करो । जिधर खुदा न हो उस ओर मेरा पैर कर दो ।"

अब तो मुसलमान चकराये ।

तब नानक ने समझाया-"उसे सब जगह और सब तरफ न मानकर किसी एक खास जगह में मानना मनुष्य की अपनी बौद्धिक संकीर्णता है । अच्छा हो कि आप लोग भी उसे मेरी ही तरह सब जगह और सब तरफ मानें । इसी में खुदा की बड़ाई है और इसी में हमारी सबकी भलाई है ।"

गुरु नानक की सहनशीलता, निर्भीकता और ईश्वरीय निष्ठा देखकर मुसलमानों का अज्ञान दूर हुआ । उन्होंने उन्हें सच्चा संत समझा और अपनी भूल की माफी माँग कर उनका आदर किया ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हाजी ने वह हवेली, धन-सम्पत्ति सब दान कर दी और नानक का अनन्य भक्त बनकर साथ रहने के लिए कहा । कृपालु गुरू ने उसे भी अपने चरणों में स्थान दिया ।

निर्भीक किन्तु सहनशील संत

निर्भीकता, सहनशीलता और समदर्शिता सच्चे संत के आवश्यक गुण माने गए हैं । जो किसी भय अथवा दबाव में आकर अपने पथ से विचलित हो उठे, अपने व्यक्तिगत अपमान अथवा कष्ट से उत्तेजित अथवा विक्षुण्ण हो उठे अथवा जो किसी लोभ-लालच, ऊँच-नीच, धनी-निर्धन, पद-पदवी के कारण किसी के प्रति अंतर माने उसे सच्चा संत नहीं कहा जा सकता । सच्चा संत भगवान के राज्य में निर्भय विचरता और व्यवहार करता है । सुख-दु:ख, मान-अपमान को उसका कौतुक मानता है और प्राणी मात्र में समान दृष्टिकोण रखता है । उसके लिए न कहीं भय होता है, न दु:ख और न ऊँच-नीच । सिक्खों के आदि गुरु नानक साहब में यह सभी गुण पूरी मात्रा में मौजूद थे और वे वास्तव में एक सच्चे संत थे ।

गुरु नानक गाँव के जमींदार दौलत खाँ के मोदीखाने में नौकरी करते थे । जमींदार बड़ा सख्त और जलाली आदमी था । किन्तु गुरु नानक न तो कभी उससे दबे, न डरे । बल्कि एक बार जब उन्होंने तीन दिन की विचार समाधि के बाद अपना पूर्ण परीक्षण कर यह विश्वास कर लिया कि अब उन्होंने जन-सेवा के योग्य पूर्ण संतत्व प्राप्त कर लिया है तब वे दौलत खाँ को यह बतलाने गए कि अब वे नौकरी नहीं करेंगे बल्कि शेष जीवन जन-सेवा में लगायेंगे ।

जमींदार ने उन्हें अपने बैठकखाने में बुलवाया । गुरु नानक गए और बिना सलाम किए उसके बराबर आसन पर बैठ गए । जमींदार की भौंहें तन गईं, बोला-"नानक ! मेरे मोदी होकर भी तुमने मुझे सलाम नहीं किया और आकर बराबर में बैठ गए । यह गुस्ताखी क्यों की ।" नानक ने निर्भीकता से उत्तर दिया-"दौलत खान ! आपका मोदी नानक तो मर गया है । अब उस नये नानक का जन्म हुआ है जिसके हृदय में भगवान की ज्योति उतर आई है और अब जिसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिकार नहीं मिला ।" दरवाजे पर मरदाना और गुरु नानक को खड़ा देखकर बुड्ढे ने उसे आँखें दिखा कर चुप रहने का इशारा किया और तख्त से उतर कर उनके पास आया । उनके लिए सबसे अच्छे कमरे की व्यवस्था करने लगा ।

सफेद कपड़े और लंबी दाढ़ी वाले इस बाबा को 'हाजी' या 'शेख' भी कहते थे । यात्रियों को मीठी-मीठी बातों से बहलाकर और सुख-आराम की सभी सुविधाएँ दिखाकर-फुसलाकर अपने यहाँ ठहराना, रात को उनकी हत्या कर देना और उन यात्रियों के पास जो कुछ भी सामान हो उसे हड़प लेना उसका काम था । गुरु और मरदाने ने उन दोनों की बातें सुन ली थीं । यद्यपि शेख और उसके नौकर ने न समझ में आने वाली भाषा में बातचीत की थी परंतु चेहरों के हाव-भाव देखकर मरदाना को कुछ आशंका हो गयी थी । इसलिए उसने गुरु से कमरे में प्रवेश करते ही निवेदन किया-"बाबा ! चुपचाप निकल चलें । अँधेरा है वरना न जाने क्या होगा ।"

गुरू ने कहा-"नहीं, जो कुछ होता है चुपचाप देखते चलो" और गुरू-शिष्य दोनों सोने के पूर्व की प्रार्थना करने लगे । नानक ने एक भजन शुरू किया । मरदाना साथ में रवाब पर संगत करने लगा । भजन हाजी के हृदय को मथने लगा क्योंकि उसमें उसके ही चरित्र का वर्णन था । उसके दुष्कृत्यों और धार्मिक ढोंगों का उल्लेख कर खुदा से डरने के लिए कहा जा रहा था ।

हाजी के अंतस् में भजन के भाव गहराई तक बैठकर उसे मथने लगे । उसे लगा कि जिन राहगीरों को मरवा कर उसने उनके मुर्दे गायब किए हैं वे सब उठ-उठकर उसे पकड़ने के लिए चले आ रहे हैं, उनसे बचना मुश्किल है ।

उधर नानक गाए जा रहे थे और मरदाना भी उसी तन्मयता से रवाब बजाए जा रहा था । अकस्मात् कमरे का दरवाजा खुला और 'बाबा मुझे बचाइये'-कहता हुआ हाजी नानक के चरणों में लोटने लगा ।

गुरू उसके सिर पर स्नेह से हाथ फेरने लगे । हाजी ने अपने कुकृत्यों की पूरी कहानी सुनाई और इन पापों से उबरने की प्रार्थना की । नानक ने कहा-"तुमने अपनी गलती समझ ली है । उसे सुधारने के लिए जितनी सम्पत्ति लूटी है वह सब समाज को लौटा दो ।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org